पत्र आयेहैं जिनका ढेरसा लगाहुआ है । इस समय भारतवर्ष शोकमें डूबरहाहै। समाचार पत्रभी इस बात का पूरा प्रमाणहै कि लोगोंको हार्दिक दुःखहै । हमें केवल उनकी मृत्युपर खेदही नहींहै बरन गर्वभीहै। उनका शासन एक शताब्दिके चार पंचमांश को पहुंचकर अन्य राजाओंके शासन कालसे बढ़ निकलाथा । परम बृद्धावस्थामें अन्त तक वह प्रेम और बृद्धि के लिये सदा युवतीके समान काम करतीथीं । उन्हें राज्य और प्रजाके लिये कोई कार्य करना शेष नहीं रहाथा । और न किसी प्रकारके वैभवमें न्यूनताथी । उन्होंने ग्रेट ब्रिटनके साथ भारत वर्षको जोड़कर उस राज्यको जगत् प्रसिद्ध करदियाथा । केवल ब्रिटिश राज्यमें ही क्यों बरन संसारभरमें यदि कोई व्यक्ति महारानी के समान गुण रखने वाला बीसवीं शताब्दिमें जन्मधारण करे तो संसार का सौभाग्य समझना चाहिये । मैं आज इसी लिये इस कौंसिलमें कुछ काम नकर इसे एक सप्ताह के लिये बन्द करता हूं ।"

श्रीमान्‌के व्याख्यानसे महारानी विक्टोरियाके सच्चे गुण और भारत वासियोंके हार्दिक शोक का बोध होताहै । भारतवासियोंके लिये वाइसरायके वाक्य एक सनद के समानहैं । उन्होंने सन् ५८ के ढिंढोरे को जो अपना नेता बतलायाहै वह भी ध्यान देनेयोग्यहै । भारतवासियोंके शोकपर श्रीमान् नवीन सम्राट् सप्तम एडवर्डने जो धन्यवाददिया उसका उल्लेख इसीपुस्तक के अंतमें उनके चरित्रमें किया गयाहै ॥

भारतीय सेवक सहित महारानी।



# अध्याय ६९.

## महारानी पर भारतकी प्रजाका प्रेम।

जिन महारानीके भारतवासियोंने कभी दर्शन नहीं कियेथे, जो भारतीय प्रबंधमें कभी हाथ नहीं डालतीथीं और जिनकी पार्लियामेंट और मंत्रिमंडलमें भारतका एक भी प्रतिनिधि नहीं है उनपर भारतवासियोंका इतना प्रेम क्यों-था जिनके स्वर्गवास होनेपर यहां वालोंने इतना शोक क्यों किया और जिन्हें इस देश वाले देवीके समान क्यों समझतेथे? चरित्रके अंतमें इन बातोंपर भी विचार होना आवश्यक है। इंग्लैंड के राज्यप्रबंधके अनुसार राजाको प्रबंधके भीतरी कामोंमें हाथ डालनेकी सत्ता नहीं है। राजाकी सम्मतिके प्रतिकूल यदि पार्लियामेंट और मंत्रिवर्गका काम होतो वह दोनोंको बदल सकता है किन्तु उनके किये हुए कामोंमें हाथ नहीं डाल सकता है। भारत प्रबंधका संघटन विचित्र है। ब्रिटिश उपनिवेशोंके निवासियोंकी पुकार पार्लियामेंटमें पहुंचने का मार्ग है किन्तु भारतकी ओरका एक भी प्रतिनिधि नहीं है। इस कारणसे श्री-मतीके कानतक देशकी सच्ची दशा पहुंचानेका कोई उपाय नहीं था। इतना होनेपर भी जो बात आपके श्रवण गोचर होती थी उस पर आप अच्छी तरह विचार कर भारत वासियोंकी सहायता करती थीं। आपने देशियोंपर प्रेम दि-खलाने के लिये उस अवस्थामें, जब भारत वासी स्वर्गको प्रयाण कर जाते हैं और जो जीते हैं वे बिलकुल अशक्त होतेहैं, भारत वर्षकी मुख्य भाषा उर्दू जो हिन्दी का एक रूपान्तर है सीखी थी। आपको इस देशपर विशेष प्रकारका प्रेमथा इसीलिये इंग्लैंडमें वहांकी रीति भांति जानने वाले बढ़ियासे बढिया सेवक विद्यमान रहते हुए भी वह अहमदखां और गुलाम मुस्तफा नामक दो सेवक सदा अपने पास रखती थीं। दोनों सेवक श्रीमतीके परम कृपापात्र हैं। श्रीम-ती अधिक अशक्त होगईथीं इसलिये येही आपको उठाने बैठानेका काम कर-तेथे। श्रीमतीकी समाधिसे पूर्व उनकी मरण शय्याका पहरा इन्हींको सौंपा गया था। दोनों सेवक मुसलमान थे। आपके पास कोई हिन्दू नहीं था। इस-का कारण यह नहीं समझना चाहिये कि उनको हिन्दुओंसे घृणाथी किन्तु उच्चवर्णके हिन्दू आपकी सेवा स्वीकार नहीं कर सकते हैं और नीच वर्णका र-खना श्रीमतीकी इच्छा और वहांके राज नियमोंके विरुद्ध था। श्रीमतीने उर्दू आगरा निवासी हाफ़िज़ अबदुल करीम साहबसे सीखीथी और अपने भारत

वासी सेवकोंके सिवाय आप राज कुमार ड्यूक आफ़ कनाट और उनकी पत्नीसे भी जो बहुत कालतक भारत वर्षमें रहेथे प्रायः उर्दूमें बात चीत किया करती थीं ॥

जब कभी भारतवर्षपर अकाल, देशव्यापी रोग, रेल्वे दुर्घटना और पहाड़ टूटपडने आदिकी विपत्ति पड़ती थी श्रीमती दीन दुःखियाओंके लिये सहानुभूति प्रकाश करती और उनकी सहायताके लिये चंदा देनेमें सबसे अग्रणी बनतीथीं इसबातका ताजा प्रमाण सन्१९००ई० का अकाल और दार्जीलिंगकी दुर्घटना है। श्रीमतीको पति पुत्रोंके मरणका जब२ कष्ट सहना पड़ा तब ही तब भारतकी प्रजाने आपके दुःखको अपना दुःख समझा और महारानीको " महारानी " की पदवा मिलने तथा ज्यूबिली आदिके महोत्सवमें भारतवासियोंके हृदयका सच्चा हर्ष देखकर श्रीमतीको इसदेशकी प्रजाकी भक्तिका निश्चय होगयाथा । वह जानतीथीं कि भारतवासी सदासे राजाको ईश्वर का विशेष अंश वा अवतार मानते आयेहैं और सन् ५७ के उपद्रवके बाद जब अंगरेज़ लोगोंके कोपानलकी ज्वालामें इंग्लैंडके मंत्रिमंडल की नीतिमे पड़कर भारत वासी भस्महोना चाहतेथे उससमय पतिकीं सम्मातिसे आपहीने इस देशका धर्म बचाया था । सन् ५८ काढिंढोरा श्रीमतीकी इच्छासे ही लिखागयाहै। यदि उसमें आप उचित परिवर्तन न करतीं तो न मालूम भारत वर्षकी क्या दशाहोती । इसका वर्णन अन्यत्र होचुकाहै इसलिये यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । श्रीमतीका सच्चरित्र और वयोवृद्ध होनाभी उनपर भारत वासियों की पूज्य बुद्धिका कारणहै॥

श्रीमतीके भारतप्रेमकी सबसे बढ़कर साक्षी आपकी "दिनचर्या (डायरी )" है । इसमें श्रीमती नित्यकी घटना में लिखा करती थीं। यह अभीतक विलायत में प्रकाशित नहीं हुई है । छपनेसे बडी २ बातें मालूम होंगी ॥

---

# अध्याय ६६.

## श्रीमतीका भारतमें स्मारक ।

श्रीमतीके नामपर भारत वर्ष के मुख्य २ नगरोंमें आपकी मूर्त्ति,कालेज, स्कूल, अस्पताल और अनेक स्मारक इस समय विद्यमान हैं । श्रीमतीके स्वर्गवास होनेपर इस देशके वाइसराय लार्ड कर्जनने देशभरकी ओरसे एक स्मारक बनानेका संकल्प कियाहै । यद्यपि सन्९७ और १९००के लगातार अकालने देशको दारिद्रता के शिरपर पहुंचा दियाहै, इस देशमें जो लोग धनाढ्यके नामसे प्रसिद्धहैं वेभी

अकाल और प्लेगसे दीन होने उपरांत अकाल फंड और ट्रांसवाल के युद्धमें धन और मनुष्योंसे बहुत कुछ सरकारकी सहायता करचुकेहैं परंतु वे इस समय अपनी दीनता को भूलकर "विक्टोरिया जातीय स्मारक फंड "में मुक्त हस्तसे रुपया दे रहेहैं । इस पुस्तक के प्रेसमें जाने तक इस फंडमें पचास लाखके लगभग रुपया इकट्ठा हो चुकाहै । इस देशके राजा प्रजाने केवल इसी फंडमें रुपया नहीं दियाहै बरन जातीय स्मारक के सिवाय प्रान्त २ और नगर २ में स्मारक बननेकी जुदी व्यवस्था होरहीहै । अभीतक कोई नहीं कहसकताहै कि, कहांपर किस प्रकार का स्मारक बनाया जायगा ॥

यद्यपि देशके अनेक विद्वान प्रजा और कितनेही ऐंग्लो इंडियन समाचार पत्र ( पायोनियर आदि ) कलकत्तेमें एक वृहत् भवन बनवानेके विरोधीहैं और वे चाहतेहैं कि श्रीमती देशियोंपर जैसी दया रखतीथीं उसके अनुरूप ऐसा स्मारक बनायाजाय जिससे भारतवर्षकी दरिद्रता दूरहो किन्तु लार्ड कर्जनने कलकत्ते के मैदानमें एक विशाल भवन बनाना निश्चय किया है इसमें श्रीमती की एक मूर्त्ति रक्खी जायगी और महलके भीतर भारत वर्षके इतिहाससम्बन्धी अनेक पदार्थ प्रदर्शित होंगे । अभीतक ठीक २ निश्चय तो नहीं है कि, इसमें क्या २ होगा किन्तु श्रीमान्‌ने कलकत्तेके डलहौसी इन्स्टीटयूटमें वक्तृतादेते समय कहा है कि–" विक्टोरिया हालमें बादशाह बाबरके समयसे आजतक जितने वीर मत प्रवर्त्तक, प्रसिद्ध राजा, शूर, देशहितैषी और विद्वान होचुकेहैं उनकी प्रतिमूर्त्तियां रक्खी जाँयगी । और दार्शनिक, कवि, और ग्रंथकारोंकोभी इसमें स्थान मिलैगा । इसके सिवाय अकबरकी पगड़ी, जहांगीरका बखतर तथा भारतवर्ष की प्राचीन और अर्वाचीन कारीगरीके नमूने भी इसमें स्थान पावैंगे " ॥

## अध्याय ६७.

## श्रीमतीको आशीर्वाद ।

गत अध्यायमें जिन स्मारक चिह्नोंका वर्णन हुआहै वे चर्मचक्षुके अगोचर नहीं है किन्तु आपका मुख्यस्मारक भारतके प्रजाकी हृदयमें विद्यमानहै । श्रीमती की दया, श्रीमतीके सद्गुण और सच्चरित्रने भारतवासियोंके हृदयमें निवास कियाहै । वही स्मारक सबसे बढ़करहै और वही चिरस्थायीहै । जिसका

संसारमें यशहै, जिसने जन्मसे लेकर मृत्यु तक अपना जीवन परोपकारमें बिताया है, जो अपने दुःखसे प्रजाके दुःख को अधिक समझतीं रहीथीं जिन्होंने शत्रु परभी दयाकर दयाकी मूर्त्ति खड़ीकी थी, जिनके लिये ब्रिटिश और भारतवर्षकी प्रजाके सिवाय अन्य २ देशोंके लोग भी शोकके आंसू बहाते हैं, जिन्होंने भलाईके सिवाय बुराईका कोई कार्य नहीं किया, जो सदा गृहस्थीके कार्य और विशाल राज्यका बोझा शिरपर होने पर भी ईश्वर भक्तिमें दत्तचित्त रहीं, जिन्होंने पतिको ईश्वर जाना उनका स्वर्ग-वास होनेमें संदेह नहीं है । श्रीमतीने इस असार संसारमें अपने कर्तव्यका पूर्णतया पालन कर वृद्धावस्थामें स्वर्गका मार्ग लिया है उनका वहां भी आदर है । परमेश्वर उनका सदा आदर करै और वह अनेक युगोंतक देवलोकमें निवास करनेके साथही भारत वासियोंके सुख दुःखकी ईश्वरतक गुहार पहुँचाकर मोक्षपदको प्राप्त हों यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है । केवल मेराही नहीं श्रीमतीकी असंख्य प्रजाका आशीर्वाद है ॥

श्रीमतीने वृद्धावस्थामें स्वर्गको प्रयाणकर ब्रिटिश साम्राज्यके शासन करने के लिये अपने बड़े पुत्रको पूर्ण वयमें संसारका पूरा अनुभव प्राप्तकर श्रीमतीके समान गुण ग्रहण करनेके अनन्तर छोड़ा है । ईश्वर उनको अपने पुत्र पौत्रादि सहित प्रसन्न रक्खै । और उनके शासनमें प्रजाको अधिक सुख हो ॥

वर्तमान सम्राट् सप्तम एडवर्डका चरित्र इस पुस्तकके अंतमें दिया गया है ॥

प्रथमभाग समाप्त ।

श्रीः ।

# श्रीमतीकेशासनकी मुख्यघटनायें ।

## भागदूसरा ।

### अध्याय १.

### प्रथमवर्षकी तीन बातें ।

श्रीमतीके सिंहासनासीन होने पूर्वसे ही इंग्लैंडमें यहूदियोंको धर्म द्वेषसे गवर्नमेंट की सेवामें बड़े २ पद नहीं दिये जाते थे । श्रीमती के गादी विराजनेके चौथेही दिन मिस्टर मोंटी फ्योर नामक यहूदी लंडन नगरका शेरीफ नियत किया गया । और इसके बाद नवंबर मासमें उसे नाइट की उपाधि दीगई । इस बातने गवर्नमेंट और प्रजाकी दृष्टिमें प्रमाणित करदिया कि श्रीमतीका शासन परस्पर के धर्म द्वेषको छोड़कर सब जाति और सब देशके लोगोंके साथ समान होगा । इस सिद्धान्त का शासनारंभके साथ जैसे आरंभ हुआ था वैसेही अंत तक निर्वाह हुआ ॥

आपके शासनारंभसे पूर्व इंग्लैंडके राज्यमें यह नियम था कि जो मनुष्य जाली काग़ज़ बनाताथा उसे फांसीका दंड दिया जाताथा । यह नियम बहुतही भयंकर था । इंग्लैंड जैसे सभ्यदेशमें जिसने संसारमें सभ्यता फैलानेका बहुत कालसे बीड़ा उठा रक्खाथा इस नियमका होना लोगोंकी दृष्टिमें बहुत निन्दनीय समझाजाताथा । इंग्लैंडकी प्रजा इस नियमसे बहुत अप्रसन्नथी । केवल थोड़ेसे हठीले कंसरवेटिव लोगों के आग्रहसे यह नियम चलरहा था । राजा चौथा विलियम लिबरल होनेपरभी उन लोगोंके दबावसे कुछ नहीं कह सकता था। श्रीमतीके सिंहासन पर विराजनेके सत्ताईसवें दिन इस नियमको उठादेने का बिल पार्लियामेंटमें उपस्थित हुआ। उदारनीति रानीकी हार्दिक उदारताने हठीलोंके चित्तपर ऐसा प्रभाव डाला कि उन्हें यह बात स्वीकार करनी पड़ी । बहुत वादानुवादके पश्चात् नवीन आईन पासहोगया और उसीदिनसे जालसाज़ लोग फांसीपर जाकर प्राणदेनेसे बच गये ॥

तीसरी बातने संसारका बहुतही उपकार किया। उपकार ऐसा वैसा नहीं जिससे केवल बड़े २ मनुष्योंको वा इंग्लैंडकी प्रजाकोही लाभ पहुंचाहो। इसकार्यसे मनुष्य मात्रकी स्थितिमें एक आश्चर्यजनक परिवर्त्तन हुआ। कार्य यहथा कि विद्युत शास्त्रके मुख्य आचार्य मिस्टर ह्वीटसन और कूक जो बहुतकालसे इस बातकी शोधमें लगे थे, श्रीमतीके शासनके प्रथम वर्षमें लंडनमें यूस्टन स्कैर मुहल्लेसे केमडनतक तार लगानेमें समर्थ हो सके। यदि बिजलीके बलसे तार लगानेकी क्रिया संसारमें न होती तो आज कल सभ्यदेशोंकी जैसी उन्नति देखनेमें आतीहै उसका दशवां हिस्साभी न होता । श्रीमतीके शासन के प्रथम वर्षमें इस शक्तिका आविष्कार हुआ जिससे मानों यह सूचना मिली कि आपके राज्यमें कलाकौशल्यकी बहुत उन्नति होगी। इस विषयमें भी श्रीमतीके शासनने जिन बातोंका आरंभ कियाथा उनको उन्नतिके शिखरपर चढ़ाकर छोड़ा ॥

## अध्याय २.

## काबुलका प्रथम युद्ध ।

जिससमय श्रीमतीके शासन का आरंभ इंग्लैंडमें ऐसे उत्तम प्रकारपर हुआ भारतके शासनने एक भिन्नही मार्ग ग्रहण किया । सुप्रसिद्ध यात्री कप्तान एलेक्जेंडर बर्नेस काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदके साथ व्यापार संबंधी कामोंमें संधि करनेके लिये काबुल गया। प्रसिद्ध इतिहास कर्ता और पार्लियामेंटके मेम्बर मिस्टर जंस्टिस मेकार्थी तथा कप्तान बर्नेस ने लिखाहै कि अमीर दोस्त मुहम्मद ब्रिटिशगवर्नमेंट और प्रजाके साथ मित्रता रखतेथे । उनको ब्रिटिश गवर्नमेंट की इतनी खातिर स्वीकारथी कि यदि कप्तान साहब चाहते तो रूसीदूतको जो उससमय काबुलके दर्बारमें आने वालाथा अपने पास न बुलाकर कहरसेही टरकादेते परंतु विलायत और भारतके अंगरेज़ अधिकारियोंको रूसकी औरसे इतना संदेह होगयाथा कि उन्होंने अमीर दोस्त मुहम्मद का बिलकुल विश्वास न कर उन्हें शत्रु मान लिया । पंजाब केसरी महाराज रणजीतसिंह काबुलके शत्रु और भारत गवर्नमेंटके मित्रथे । अमीरने अंगरेजोंसे कहकर पंजाब नरेशसे मित्रता करना चाहाथा परंतु सरकारने उनकी बातपर ध्यान न देकर अमीरसे युद्ध करने का ठहराव किया। मिस्टर जस्टिस मेकार्थी ने लिखाहैकि इसविषयमें कप्तान बर्नेसने जो सम्मतिदीथी उसे उलटी तरह पार्लियामेंट में उपस्थित कर उसके कथन का यह आशय समझागयाकि कप्तान काबुलसे युद्ध करना चाहत

है। भारत वर्षके गवर्नर जनरल लार्ड आकलैंडने दोस्त मुहम्मद की गादी शाहशुजाको दिलाना निश्चयकिया। शाहशुजा गादीके लिये उम्मेदवार नहीं हुआथा किन्तु सुनाहैकि उसे गादी देनेकी उत्तेजना दी गई। काबुलके साथ प्रथम युद्धहो शाह शुजा अमीर बनायागया। उसे वहांकी प्रजा नहीं चाहतीथी इसलिये रक्षाकरनेकेलिये सरकारको आठ लाख सेना काबुलमें रखनी पड़ी। अफ़गानिस्तानकी प्रजाने सन् ४१ के नवम्बर में बलवा किया। ब्रिटिशसेना बिलकुल काटडाली। इसपर भारत गवर्नमेंटको फिर सेना भेजकर काबुलियों का दमन करना पड़ा परंतु अंगरेज़ी सेना अधिक कालतक वहां ठहर न सकी। भारत वर्षके नवीन गवर्नर जनरल लार्ड एलनबरोने १० अक्टूबर सन् १८४२ ई० को एक मंतव्यमें यह प्रकाशित किया कि " काबुलके विषयमें पुराने गवर्नरजनरलोंकी युक्ति निष्फल हुई। काबुल जैसी स्वतंत्र प्रजापर उसकी इच्छाके विरुद्ध राजा नियत करना ब्रिटिश नीतिके विरुद्धहै इसलिये अफ़गानिस्तानवाले अपने यहां जिसे अमीर बनाना चाहें वही गवर्नमेंट को स्वीकारहै। और अंगरेज़ी सेना काबुलमें न रक्खी जायगी। और प्रकृतिने भारत वर्षकी जो सीमा निर्द्धारित कीहै उसीपर गवर्नमेंटको संतोष होगा॥ "

इस युद्धमें सर एलेकज़ेंडर बर्न सर विलियम मेकोनाटन और उनकी समग्र ४००० सेना काटडाली गई। और इस भयंकर दुर्घटनाकी ख़बर देनेके लिये केवल एकही मनुष्य डाक्टर बाइड बचे जो लुढ़कते पुढ़कते नवंबरके चले १३ जनवरीको जलालाबाद पहुंचे। नवीन ठहरावके अनुसार दोस्त मुहम्मदको फिर गादी मिलगई। जनरल पालकने काबुल जाकर मारने काटनेसे जो लोग बचे बचाये थे उनको छुड़ाया और दोस्त मुहम्मद से नवीन ठहराव के अनुसार संधि कर ब्रिटिश गवर्नमेंटका अफ़गानिस्तान में दबदबा स्थिर किया॥

---

# अध्याय ३.

## व्यापारकीस्वतंत्रता और वाष्पयंत्र।

श्रीमतीके शासनके द्वितीय वर्ष में वाष्पकी सहायतासे प्रथम वार " ग्रेटवेस्टर्न " नामक धूमपोत इंग्लैंडसे चलकर पंद्रहवें दिन एमेरिका पहुँचा। इससे पहले जहाजें केवल पालके सहारे से चलाई जातीथी और इस कारण उन्हें भारत के आने में छः मासके लगभग लगते थे। इस सफलतासे संसार भर

में व्यापार की बृहत् उन्नतिका आरंभ हुआ । और इसीके द्वारा युरोपियन लोगोंने पृथ्वी भरके समुद्रों की यात्रा कर एक पैंडू २ धरतीको भी देखनेसे न छोड़ा ॥

सन् १८१५ ई० में इंग्लैंडकी पार्लिया मेंटने एक ऐसा आईन बनाया था जिसके अनुसार अन्नका भाव प्रत्येक कार्ट पीछे अस्सी शिलिंगका नहो वहां तक बाहरका अन्न इंग्लैंडमें नहीं आने दिया जाताथा । यद्यपि पीछेसे इसमें थोड़ा बहुत संशोधन हुआथा किन्तु इस आईनसे दीन लोगोंको महंगीका बहुतही कष्ट भोगना पड़ताथा । और कई बार भूखोंके मारे प्राणतक न्योछावर कर डालते थे । इस कष्टसे प्रजाको बचानेके लिये श्रीमतीके शासनके द्वितीयवर्षमें एक सभा नियत हुई । इसके सभापति पार्लियामेंटके पिताकी उपमा पाने वाले मिस्टर चार्लेस व्हीलर्स हुए।अनेक वर्षोंतक अविश्रांत परिश्रम करने बाद सन् १८४९ई० के जनवरी मासकी ३१ तारीखको इन लोगोंकी सफलता हुई ।और ग्यारह वर्ष के परिश्रमसे उन लोगोंने इंग्लैंडमें बाहरसे आनेवाले अन्नका महसूल उठवा दिया। इस नियमके प्रचारसे पूर्व आयर्लैंडमें वारंवार अकाल पड़ाकरता था । लोंगोको केवल आलूपर निर्वाह करना पड़ता । सरकारने दीनोंको काम देने और चन्दे आदिसे सहायता करनेका बहुत कुछ प्रयत्न किया परंतु कुछ लाभ न हुआ और लाखों मनुष्य वहांसे भागकर एमेरिकामें जाबसे । ग्रेटब्रिटेन को उजाड़ करने वाला आईन उठकर जबसे अप्रति बंध व्यापारकी प्रणालीका प्रचार हुआ तबहीसे वहांके लोगोंकी उन्नतिका आरंभ हुआ ॥

सन् १८३९ई०अर्थात् श्रीमतीके शासनके तृतीय वर्षमें भारत वर्षके विषयमें एक बात हुई। दक्षिण एफ्रिकामें बसने वाले अंगरेजों के दबावसे यहां की गवर्नमेंटने एक नियमका प्रचार किया जिसके अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनीकी सीमाके बाहर काम करने वाले भारतवासी मज़दूरोंको दक्षिण एफ्रिकामें लेजाना बन्द हुआ । इससे दक्षिण एफ्रिकामें व्यापार करने वाले अंगरेजोंको बहुत चिन्ता हुई और पीछेसे यह नियम उठानापड़ा । फिर उनलोगोंने ऐसे नियमोंका प्रचार करवाया जिनसे आजकलके भारतवासी कुली उपनिवेशोंमें जाकर ब्रिटिश राज्यमें दासत्व भोगरहेहैं । और कुलियोंको भरती करने वाली डिपोमें अनेक प्रकारके कपटकर दीनों को छलाजाताहै ॥

# अध्याय ४.

## चीनसे लड़ाई, अदनका बंदर और दास व्यापार।

सन् १८३९ ई० में भारतवर्ष से चीन जाने वाली अफ़ीमका वहांके बन्दरोंमें उतरना चीनगवर्नमेंटने बिलकुल बन्द करदिया और उस खेपमें जितनी अफ़ीम गईथी उसे समुद्रमें डलवाकर उसका रुपया अंगरेज व्यापारियोंको देदिया और आगेसे अफ़ीम आने का कठिन निषेध किया। इससे पूर्व चीन गवर्नमेंटने एक नोटिस देकर भारत गवर्नमेंटको सूचना देदीथी परंतु ईस्ट इंडिया कम्पनी की आयका अफीम एक मुख्य साधनथी इसलिये कंपनीने उक्त नोटिसकी कुछ पर्वाह न कर फिर अफीम चीनको भेजी जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत गवर्नमेंटने चीनपर चढ़ाई की। युद्धमें चीनकी हार हुई। हांगकांगका बंदर ब्रिटिश गवर्न मेंटके हाथ आया और अन्य पांच बंदरों पर स्वतंत्रातासे अंगरेज़ोंका माल उतरने देनेकी बात लाचारीसे चीनको स्वीकार करनी पड़ी। ब्रिटिश गवर्नमेंटने चीनसे ४५ लाख पौंड दंड लिया और १२॥ लाख पौंड व्यापारियोंको हर्जानेके दिलाये। इस युद्धसे चाहे भारतके व्यापार को पूरा लाभ हुआ किन्तु चीनकी इच्छाके विरुद्ध हट्टे कट्टे चीनियोंको अफ़ीमची बनाकर उनकी शारीरिक और आर्थिक दुर्दशाका लड़ाईसे आरंभ होगया और सत्व ईंग्लैंडके पंजेमें पड़कर निर्बल चीन अपनी प्रजाको अफ़ीम खानेके दुराचारसे न रोकसका॥

अदनका बंदर ब्रिटिश सेनाने इसी वर्षमें विजय किया। यह बंदर व्यापार तथा जहाज़ोंके आवागमनके लिये बहुत ही आवश्यक है। अंगरेज़ों के विलायत जानेका अदन एक नाका है। इसमें भारतकी सेना रहकर वहांकी रक्षाकरती है और यह बंबईकी गवर्नमेंटके अधिकारमें है। सुएज़की नहर बननेसे विलायत जाने वालोंको मिसरका चक्कर दिये बिना सीधे जानेका मार्ग खुल गया है और जो मार्ग डेढ मासमें समाप्त होताथा उसमें अब केवल १७ दिन लगते हैं। इस नहरकी रक्षा इसी बंदरकी सेनासे होती है। जर्मनी और फ्रांसके वारंवार दबाने पर भी अनेक कौसलसे ब्रिटिश गवर्नमेंट मिसरको इस नहरपर अपना आधिपत्य रखनेके लिये नहीं छोड़ती क्योंकि नहर हाथमें रहे बिना अंगरेज़ोंसे भारत दूर पड़ता है॥

श्रीमतीका विवाह होने बाद थोड़ेही दिनोंमें आपके पति प्रिंस एलबर्टकी प्रेरणासे संसारसे दास व्यापार बंद करनेके लिये एक सभा स्थापित हुई। इसके

सभापतिका आसन राज्ञीपतिने स्वीकार किया । इनके प्रयत्नसे अंतमें इंग्लैंड ने दास व्यापार बन्द करा संसारमें नाम पाया ॥

इसी वर्षमें इंग्लैंडने डाक विभागमें बहुत कुछ उन्नतिकी । पहले चिट्ठी और पारसलका महसूल, पहुंचनेका स्थान जितना ही दूर होताथा उतना, अधिक लिया जाता था । महसूल लेनेमें पत्रके तौलके सिवाय उसके पृष्ठ की भी गणना की जातीथी । चिट्ठीका महसूल कमसे कम चार आना था । इसके सिवाय डाक आज कलकी तरह नित्य आती जाती नहीं थी । पार्लियामेंटके सभासद सर रोलेंड हिलके प्रस्तावसे सन् १८४०ई० में १० जनवरीको नवीन नियमका प्रचार हुआ । इसके अनुसार आधे आंउस ( १। तोला ) तोलके पत्रकी एक पेनी लेना निश्चय हुआ । थोड़े कालके अनंतर इस योजनाके अनुसार भारतमें भी थोडा बहुत सुधार हुआ ॥

सन् १८३७ई० में बोर लोगोंने नेटाल प्रान्तमें निवासकर उसको आबाद किया और वहाँका स्वतंत्र शासन आरंभ कियाथा किन्तु सन् १८४५ई० में अंगरेज़ोंने बोरोंसे युद्धकर नेटाल उनसे छीन लिया । तबसे नेटाल ब्रिटिश गवर्नमेंटके अधिकार में है ॥

---

# अध्याय ९.

## सोमनाथके मंदिरके किवाँड़ ।

काबुलके अमीरके युद्धका चाहे भारत गवर्नमेंटके लिये परिणाम कैसाँही हुआहो परंतु हिन्दुओंके लिये इससे एक प्रकारके हर्षका कारण हुआ । हिन्दू-धर्मसे द्वेष रखनेवाला महमूद ग़ज़नवी सोमनाथके मंदिरको तोड़कर उनकी मूर्त्ति, जवाहरात और सोने चांदीके किवाड़ दक्षिण देशसे ग़ज़नीको लेगयाथा । तबसे वे किंवाड़ ग़ज़नीमें रक्खे हुए थे । काबुलसे विजयकर दोस्त मुहम्मदको दुबारा वहांकी गादीपर नियत करनेके बाद वहांसे जो सेना भारतको लौटी वह गजनीसे किंवाड़ लेती आई। सन् १०२४ई०में महमूद ग़ज़नवीने भारतपर चढ़ाई कर यहांके हज़ारों मंदिरोंको नष्ट करडाला था । काबुलके इस युद्धसे दश बारह वर्ष पूर्व पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह शाह सुजाको इस शर्तेपर काबुल दिलाना चाहतेथे कि वह गादीपर बैठकर सोमनाथके मन्दिरके किंवाड़ भारत वर्षको लौटादे। यह शर्त शाह सुजाने स्वीकार नहीं कीथी। भारतके गवर्नर जनरल लार्ड एलेनबरोने विचार कियाथा कि ये किंवाड़ फ़ीरोजपुरसे सोमनाथ तक बड़ी धूम धामसे पहुँचाये जावैं जिससे भारत वर्षकी प्रजाका गवर्नमेंटके साथ

प्रेम बढ़ेगा। इस कार्यके लिये लाट साहबने देशीराजाओं और प्रजाके नाम एक ढिंढोरा प्रकाशित करनेके विचारमे उसकी पांडु लिपि स्वीकार करनेके लिये इग्लैंड भेजी थी। उसका आशय यह था:-

" हमारी विजयिनी सेना सोमनाथके मन्दिरके किंवाड़ अफ़गानिस्तानसे लौटा लाईहै। उनके बिना ग़ज़नीमें महमूद गजनवीका मकबरा खंडहर होगयाहै। आठसौ वर्षके अपमानका बदला अब लिया गयाहै। सोमनाथ के मंदिरके किंवाड़ आप लोगोंकी हारकी जो अबतक सूचना देते थे वेही अब तुम्हारी कीर्त्तिका विकाश करतेहैं। उनके लौटा लानेसे निश्चय हुआहै कि सिंधुनदीके उसपार बसनेवाली प्रजासे आपलोग सैनिक बलमें बढ़े चढ़े हैं। सिरहिंद, रजवाडा, मालवा और गुजरातके राजा तथा सर्दारोंको मैं इस युद्धकी सफलता की कीर्त्तिका चिह्न अर्पण करताहूं। आपलोग धूमधामके साथ इन चंदनके किंवाड़ोंको अपने देशसे सोमनाथके नवीन मंदिरतक पहुंचाना। हमारी विजायिनी सेना सतलज नदीके पुलपर किंवाड़ आप लोगों को नियत तिथि पर सिपुर्द करैगी। तिथि नियत कर उसकी सूचना पीछे से दी जायगी॥

ब्रिटिश गवर्नमेंटकेलिये आप लोगोंके प्रेमपर मैं सदासे विश्वास रखता आयाहूं। वह आपके प्यारके लिये कितनी योग्यहै इसे आपलोग अच्छीतरह जानतेहैं क्योंकि वह आपके सम्मानको अपना सम्मान समझतीहै। और अफ़गानलोगोंके आप लोग अधीन थे उस समयको स्मरण दिलाने वाले मन्दिरके किंवाड़ आपको लौटानेमें उसने अपनी सेना काममें लगाईहै। मेरे ( निजके ) लिये मुझे इतनाही कहनाहै कि मेरे लाभ और विचारोंको आप लोग अपने लाभऔर विचारोंमें मिलाकर ब्रिटिशसेनाकी इस वीरताके काम परजो हर्ष आप प्रकाशित करतेहो उसमें मैं संयुक्त होताहूं। इसकार्यसे मेरे देशको और आपके देशको जिसे मैंने अपना अभी घर बनायाहै कभी न भूलने योग्य सम्मान प्राप्त हुआहै। हमारे दोनोंके देशोंके संयोगका निर्वाह और संशोधन दोनोंही की उन्नतिके लिये आवश्यकहै। मैं इसबातपर सदा ध्यान देताहूं। इसी संयोग से भारतपर पहले जो वारंवार संकट पड़ते थे उनका नाश होगा। इसी संयोगसे ब्रिटिशसेनाने ग़ज़नीके खंडहर और काबुलके बालाहिसार किलेपर अपना झंडा फहरायाथा। परमेश्वरने इससमयतक जैसी मेरी रक्षाकीहै वैसीही वह अबभी करतारहै जिससे मैं अपनी शक्ति और अधिकार का योग्य उपयोग कर आप लोगोंकी उन्नति करने और दोनों देशों के संयोग को सदा स्थिर रखनेके लिये दृढ पाये पर लाने में शक्तिवान् होऊं "॥

इस प्रस्तावसे इंग्लैंडमें बड़ी चर्चा हुई । इस बातके लिये गवर्नर जनरलको डांट बतानेके लिये पार्लियामेंटमे इस आशयका प्रस्ताव हुआ कि यह ढंग मूर्ति पूजाको उत्तेजना देने और मुसलमानोंको भड़काने वाला है । इसका कारण यही थाकि गवर्नर जनरल लार्ड एलनबरोने भूत पूर्व गवर्नर जनरलोंकी योजनाको बिलकुल उलट कर सिंधु नदीको अफ़गानिस्तानकी सीमा नियत करना निश्चय किया था । यह बात भारत की प्रजाको बहुत पसंद हुई थी । वाइस रायने श्रीमतीके नाम दिल्लीसे सन् १८४३ ई० की १९ फरवरीको एक प्रार्थना पत्र लिखाथा:—

"लार्ड एलेनबरो ५ फरवरीको दिल्ली आये। आस पासके समस्त राजा उनसे वहां पर मिले । बीकानेर, अलवर, भरतपुर, कोटा और धौलपुरके राजा तथा टोंकके नव्वाबकी सेनाने दिल्लीके किलेके चारों ओर छावनी डाल रक्खी है और कई ओरसे नगरके भीतर भी जा घुसी है । वे अपने साथ बहुतसी सेना, नौकर चाकर कुटुंब और जागीर दारोंको लाये हैं । उनकी संख्या पचास हज़ारसे कम नहीं है ॥

औरंगज़ेबके शासनके बाद आधीन राजाओंका इतना बड़ा जमघटा यहां कभी नहीं हुआ था। वे लोग सर्कार के सत्कारसे बहुत प्रसन्न हुए हैं । कल लार्ड एलेनबरोने उनको ११ रेजिमेंटकी कवाइद और अठारह तोपें देखनेके लिये बुलायाथा। इसे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए थे ॥

सोमनाथके मंदिरके किंवाड़ जो हमारी रक्षामें सिक्ख राज्यके पांचसौ सैनिक दिल्ली लाये हैं उन्हें दिल्लीसे मथुरा और वहांसे आगेरेको भरतपुर और अलवर के राज्योंकी सेना ले जायगी ॥

युद्धके विजय चिह्न लौटानेके लिये भारत वर्षकी प्रजा चारों ओरसे ब्रिटिश गवर्नमेंटको धन्य वाद देने लगी है वह इस कार्यके लिये सरकारका बड़ा उपकार मानती है । इस बातसे मुसलमानोंको बुरा नहीं लगाहै । वे इस कार्यका धर्मसे संबंध नहीं मानते हैं किन्तु प्रजाकी एकता समझते हैं । पानीपत नगरमें लगभग मुसलमानोंकी ही वस्ती है । हिन्दुओंके मन्दिरोंका नाशकर महमूद गज़नवीने वहां पर जो मसजिद बनाई थी वह अबतक विद्यमान है । वहांके लोगोंने इस कार्यके लिये जैसा हर्ष प्रकाशित किया है उससे बढ़कर प्रसन्नता अन्यत्र न बताई जायगी ॥"

लार्ड एलेनबरोकी उचित योजनाको पार्लियामेंटने मिथ्याभ्रममें पड़कर उड़ा दिया और उनके कथनानुसार दिल्लीसे किवाड न हटाये गये। इस बातसे लाट साहबके चित्त को कितना दुःख हुआ होगा इससे वही जानते थे॥

---

## अध्याय ६.

## सिंधके अमीरों और ग्वालियर नरेशसे युद्ध।

सन् १८४३ई० के आरंभमें सिंधके अमीरोंसे संग्राम हुआ। काबुलके ऊपर जो चढ़ाई की गईथी वह उन्हें पसंद न थी और इस कार्य में उन्होंने बाधाभी डाली थी। उनसे ठहराव यह था कि सिंधु नदी के मार्ग से जो माल लेजाया जावे उसपर अंगरेज कर्मचारियोंकी इच्छासे अधिक वे लोग कर न ले सकैं। उन्होंने इस शर्त को तोड़डाला। काबुलके अमीरकी तरह वे भी अपने यहां अंगरेज़ी एजेंट रखना नहीं चाहतेथे परंतु उनकी इच्छाके विरुद्ध सरकारने हैदराबादमें एक एजेंट नियत किया। और उसकी रक्षाके लिये सेना रक्खीगई। इसी कारण उन्होंने काबुल की चढ़ाई में क्रुद्धहोकर बाधा डाली। इस बातसे सरकारने उनके साथ नवीन संधि की। इसका आशय यह था कि:–" राजस्व ( ख़िराज ) के बदले उनसे कुछ भूमिलीजाय, सिंधु नदीमें जितनी अंगरेज़ी स्टीमरें फिरें उनके लिये कोयला अमीरोंसे लियाजाय और सिक्काचलानेमें उन्हे स्वतंत्रता रहै। यह बात उनको दबाकर स्वीकार कराई गई और इस संधिपत्र पर हस्ताक्षर करानेके लिये उनको बाधित कियागया। इसका परिणाम यह हुआकि सरकारके जिस सेवकने इन लोगोंको दबाकर हस्ताक्षर करायेथे उसके मकानपर संधिपत्र तैयार होनेके दूसरे ही दिन आक्रमण हुआ। युद्ध आरंभ होगया। इस लडाईमें थोड़ी हार होनेके बाद सरकारका विजयहुआ। अमीरोंको देशनिकालका दंड देकर गवर्नमेंटने सिंधप्रदेश बंबईप्रान्तमें मिलालिया॥

सिंधके अमीरों से युद्ध समाप्त नहीं होने पायाथा कि इतने ही में गवर्नमेंटका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हुआ। ग्वालियरके महाराज दौलतराव सेंधिया सन् १८२७ ई० में संतति विना मरगयेथे। उनकी गादी एक संबंधीको दीगईथी। वहभी सन् १८४३ई०में वारिस विना मरगया। उसकी विधवा रानीने दूरके संबंधियोंमें से एक पुत्र दत्तक लिया। नवीन महाराजका वय केवल आठ वर्षका था। इसलिये गवर्नमेंटने राज्यप्रबंध के लिये मामा साहब नामक सरदार

को नियतकिया । यह बात राजमाताको पसंद न हुई और इस कारण मामा साहब को तीनही मास बाद ग्वालियरकी सीमा छोड़कर अंगरेज़ी राज्यमें भाग जाना पड़ा । उनकी जगह राजमाताने गवर्नमेंटके शत्रु दादा साहब खासगी वालेको नियत किया । यह बात सरकार और ग्वालियर की संधिके विरुद्धथी इसलिये गवर्नर जनरलने दादा साहब खासगी वालाके ग्वालियर छोड़जानेकी आज्ञादी । परंतु इस बातपर ग्वालियर राज्यने बिलकुल ध्यान न दिया । और साथही राज्यके कई एक अंगरेज़कर्मचारियोंको नौकरीसे अलग करदिया । सरकारने इस चालसे क्रुद्ध होकर ग्वालियर पर सेना भेजी । महाराज पुर और पनीयारके युद्धमें ग्वालियरकी सेनाने हारखाई । इसका परिणाम यह हुआ कि ग्वालियरके बालक महाराजको ( १ ) अंगरेज़ रेज़ीडेंटकी सम्मतिपर विना शर्त कार्य करना ( २ ) ग्वालियरकी सेना ४० हजारसे घटाकर ९ हज़ार रखनी और तोपें २०० के बदले ३२ रखनी ( ३ ) ग्वालियरमें अंगरेज़ीसेना रखनी और इसका खर्च ग्वालियर राज्यसे लेना और ( ४ ) महाराज जबतक योग्य वयके न हों राज्यका प्रबंध एक कौंसिलसे करवाना और अंगरेज़ रेज़ीडेंटकी इस कार्यमें सम्मति लेनी इन शर्तोंसे संधि करनी पड़ी ॥

---

## अध्याय ७.

## कंपनी और लाट साहबकी खटपट ।

सिंध और ग्वालियरके युद्धके पश्चात् अधिक कालतक लार्ड एलेनबरो भारतके गवर्नर जनरलके पद पर न रहसके । ईस्टइंडिया कम्पनीके डाइरेक्टरोंको उनकी यह चाल पसंद न हुई । उन्होंने यह अभिशाप लगाया कि शांति पूर्वक काम करनेके बदले लार्ड एलेनबरोको लड़ाई झगड़े बहुत प्रियहैं । डाइरेक्टरोंने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी आज्ञा विना लाट साहबको पदच्युतकर विलायत बुला लेनेकी आज्ञादी ।

लार्ड एलेनबरो श्रीमतीके कृपापात्र थे । उनकी सहायतासे ही भारत शासनमें कंपनीको कुछ माल नहीं गिनते थे । उन्होंने अपने बचावमें श्रीमतीके नाम एक पत्र बारकपुरसे १४ जुलाई सन् १८४४ ई० को लिखाः—"मुझको अपने पदसे अलग करनेके विषयमें कंपनीकी आज्ञा मुझे १५ जूनको मिली । मैंने तुरंतही देशी राजाओंके नाम पत्र भेजकर सूचना देदी कि मेरी बदली होनेसे

गवर्नमेंटकी नीतिमें किसी बातकी लौट फेर न होगी । इस कार्यसे पूर्व ग्वालियरमें थोड़े कालसे कुछ गड़बड़ मच रही थी । वहां इस बातकी गप्प उड़ रही थी कि मेरे बिलायत चले जानेसे दादा साहब खासगी वाले फिर ग्वालियरको बुलालिये जायँगे । मुझको पदच्युत करनेके विषयमें कंपनीके डाइरेक्टरोंने जो कारण बतलाये हैं उनका खंडन, मैंने अर्ले आफ रिपनके नाम एक पत्र लिखकर, उसमें कियाहै । प्रार्थना है कि श्रीमती उनको ध्यानपूर्वक पढ़ें । मुझे भारत वर्षमें बड़ी कठिनतासे काम करना पड़ा है और वह काठिन्य डाइरेक्टरोंकी शत्रुतासे और भी बढ़ गया है । " इस शत्रुताके विषयमें सन् १८४३ ई० की १८ जनवरीको उन्होंने श्रीमतीके नाम एक पत्र लिखाथा जिसका आशय यह है:– " मेरी सम्मति यह है कि भारतवर्षकी स्थानीय गवर्नमेंटकी अनुचित और ऊटपटाँग चालसे देशी राजाओंका इस साम्राज्यमें आदर नहीं है । उनके स्वत्व पर आघात किया जाता है और सदा वे भयभीत रहते हैं कि हमारा राज्य छीन लिया जायगा । यदि श्रीमती भारतका शासन कंपनीसे लेकर अपने हाथमें रक्खेंगी तो यह कठिनता दूर होजायगी और भारतवर्षके राजा महाराजा श्रीमतीके अधीन राजा रहने में अपनी शोभा समझेंगे । और इस कार्यसे इस बृहत् प्रजाकी भावी संतान ब्रिटिश गवर्नमेंटको देशकी उन्नतिमें अंतःकरणसे सहायतादेंगी । भारतवर्षका प्रबंध यहांके लोगोंकी इच्छा और बहमके अनुसार,उनका भलाकरने के निश्चयसे किया जायगा और दूरदेशके जिन निवासियोंको ईश्वरने यह बृहत् राज्य सौंपाहै उनको धनाढ्य बनानेकी इच्छासे न किया जायगा तो आगे जाकर भारतवर्ष की कितनी उन्नति होगी इसबातके कहनेमें मैं अशक्तहूं " ॥

## अध्याय ८.

## सिक्खयुद्ध और कोहनूर हीरा ।

सन् १८४४ ई० में लार्ड एलेनबरों के विलायत जाने और उनकी जगह लार्ड हार्डिंजके आतेही सिक्खयुद्धका अवसर आया । पंजाबके सरी महाराजा रणजीत सिंहकी मृत्युके बाद उनकी ६०हजारसेना बेकाबू होगई । उनके बालक पुत्र दलीपसिंह राजाहुए और रानी राज्य प्रबंध करनेलगीं । वह सेनाका वेतन समयपर देनेमें असमर्थहुई इसलिये सेनाने लाहोर लूटनेकी तैयारी की परन्तु उनको सिक्ख राज्य छोड़कर अंगरेजी राज्य लूटनेकी सलाह दीगई । इसबातसे सिक्खसेनाकी

अंगरेज़ी सेनासे लड़ाई हुई और सन् १८४६ ई० में सरकारने लाहोर लेलिया। यह बात गवर्नरजनरलको पसंद न आई और पंजाब प्रान्तपर सिक्खोंके शासन स्थिर रहनेका उन्होंने एक बार फिर अवसर दिया। रानी अपने पुत्र दलीपसिंह के नामसे पंजाबका शासन करती रहीं परन्तु सिक्खसेना ६० हजारके बदले घटाकर २० हजार रक्खी गई और वहाँ अंगरेज़ी सेनाभी रखनीपड़ी परन्तु इस बातका अधिक दिनतक निर्वाह न हुआ। उसी वर्षके अंतमें रानीको पदच्युत कर पंजाबराज्यके प्रबंधके लिये आठ सिक्खोंकी एक कौन्सिल नियत हुई और लाहोरके अँगरेज़ रेजीडेंट सर हेनरी लारेन्स उसके अध्यक्ष हुए। इस योजनानेभी बहुत समयतक काम न किया। दोवर्षके अनन्तर गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीके समयमें पंजाबमें फिर बखेड़ा हुआ। यह बखेड़ा यहाँतक बढ़गया कि, काबुलका अमीर दोस्तमूहम्मद चढ़कर पेशावर तक चलाआया। उसने अटकका मोरचा अपने हाथमें लेकर उपद्रवियोंकी सहायता करना आरंभ किया। लाचार होकर ब्रिटिश गवर्नमेंटको पंजाबपर फिर चढ़ाई करनी पड़ी। सन् १८४९ ई० के फ़रवरी मासकी २१ तारीख़को गुजरातके निकट युद्धकर विजयपाया। और लार्ड डलहौसीके शासनमें पंजाबका प्रदेश सदाके लिये ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलालिया गया। तबहीसे पदच्युत महाराजा दलीपसिंह पेन्शन पाकर विलायतमें रहे ॥

पंजाबके साथ स्वर्गवासी पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंहका बहुमूल्य आभूषण भी सरकारके हाथ आया। इनमें जगत् प्रसिद्ध 'कोहनूर' हीरा भी सरकारको मिलगया। इससे बढ़कर हीरा संसारमें अभीतक सुननेमें नहीं आया है। सन् १८५८ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीने इसे श्रीमतीको भेटकिया। तबसे यह श्रीमतीके राजमुकुटमें विराजकर अपने प्रकाशसे मुकुटको प्रकाशित कर रहा है। यह हीरा मछली पट्टनके निकट गोदावरी नदीमें किसी मनुष्यको मिलाथा। सन् १३०४ ई० में सुलतान अलाउद्दीनको मालवाके राजाके यहांसे प्राप्तहुआ। उनके कुटुंबके पाससे दिल्लीके प्रथम मुग़ल सम्राट् बाबरके पास पहुँचा। उन्होंने अपने चरित्रमें लिखा था कि "संसारके दैनिक व्ययका आधा द्रव्य इस हीरेके मूल्यके समान है। सन् १७३९ ई० तक मुग़ल बादशाहोंके हाथमें रहकर वह ईरानके बादशाह नादिरशाहके यहाँ पहुँचा। जिस समय नादिरशाहने दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहको परास्तकर वहांका कोष छीना उसमें हीरा न मिला। उसको इस बातसे बड़ी निराशा हुई। उसने मुहम्मदशाहकी एक बेगम्द्वारा समाचार पाकर दिल्लीका राज्य मुहम्मदशाहको लौटादेनेका ठहराव किया। इस विचारसे उसने दिल्लीमें एक दर्बार कर उसमें राज्य मुहम्मदशाहको पीछा

सौंपते समय परस्पर पगड़ी बदलौवलकी। मुहम्मदशाहकी पगड़ीके साथही हीरा नादिर शाहके पास चला आया। तबसे वह कुछ कालतक ईरानमें रहा। फिर नादिरशाहके वारिसोंने अफ़ग़ानिस्तानमें ईरानी बादशाहत स्थापन करनेवाले अहमद शाहको देदिया। उसीको काबुलके अमीरशाह शुजासे पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंहने छीनलिया। और उनकी मृत्युके बाद पंजाब राज्यके साथही वह हीरा ब्रिटिश गवर्नमेंटके हाथमें पहुंचा। इंग्लैंड पहुंचने बाद उसको घिसकर स्वच्छ और सुडौल करनेमें आठ हज़ार पौंड व्यय हुआ। इस कार्यसे हीरेके तौलमें अस्सी केरट अर्थात् १॥। तोला २॥ रतीके लगभग न्यूनता होगई॥

---

# अध्याय ९.

## इंग्लैंडमें सूरतके नव्वाब और भारतकी रेल्वे।

सूरतके नव्वाब सन् १८४४ई० में इंग्लैंड गये। इससे पहले भारतवर्षका कोई भी राजा महाराजा विलायत नहीं गया था इस लिये वहां पर इनका बड़ा सत्कार हुआ। इस विषयमें "एन्युएल रेजिस्टर" में लिखाहै कि २१ जुलाई दिनके १२ बजे सूरतके नव्वाब जिस समय चांसरी कोर्ट देखने गये लोगोंकी इतनी भीड़ थी कि खड़े रहनेको जगह नहीं मिलती थी। यहांके सरदार और उमरावोंको भीड़में जब नव्वाब साहब न देख पड़े तो वे कुरसियों पर खड़े होगये॥

सन्१८४५ई० तक भारतमें रेल्वेका नाम नथा। यहां वालोंमें यह कोई नहीं जानता था कि रेल्वे किस चिड़ियाको कहते हैं। उस वर्ष भारतमें रेल्वे लाइने बनानेके लिये इंग्लैंडमें कई एक कम्पनियां खड़ी हुई। इनकी प्रार्थनाओंको स्वीकार करने पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनीने भारतके लाट साहबको ७ मईको एक पत्र लिखा। जिसका भाषान्तर यह है कि—" रेल्वे लाइने उसी जगह बनाना लाभदायक है जहां बनवानेका खर्च और उनके प्रबंध करनेका व्यय निकल सके। इंग्लैंडको अनुभवसे विदित हुआ है कि रेल्वे कंपनियोंको अधिक आय मालसे होती है। परंतु इस विषयमें भारत वर्षकी स्थिति भिन्न प्रकारकी है। भारत वर्ष धनी और धनाढ्य वस्तीवाला नहीं है। वहाँके निवासी दीन हैं और दूर २ थोड़ी २ संख्यामें निवास करते हैं। किन्तु वह प्राकृतिक पदार्थोंसे भरपूर हैं परंतु उन्हें लाने ले जानेके लिये सस्ता और शीघ्र चलनेवाला

साधन न होनेसे लाभदायक बाज़ारका वहां अभाव है । इस लिये यह मानना चाहिये कि इस समय रेल्वेकी मुख्य आयका आधार यात्रियों पर न होकर केवल मालपर रहैगा । इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है कि जहां लाइनें खोलनेसे लाभकी संभावना हो वहां प्रचलित करने में सहायता और उत्तेजना देना चाहिये । इस लिये एमेरिकाके दो चतुर और अनुभवी इंजिनियर हमारे दो इंजिनियरोंके साथ भेजे जाते हैं। ये लोग साधारण लंबाईकी एक लाइन तैयार करनेकी जांच करैंगे । उस जांचको आप स्वयं देखैं और उसके लिये जो कंपनी खड़ीहो उससे शर्त करनेके विषयमें रिपोर्ट करैं । " उसी वर्षमें ग्रेट इंडियन पेनन्शुला रेल्वे ( जी. आई. पी. ) और ईस्ट इंडियन रेल्वे कम्पनी खड़ी हुई । भारतकी प्रबन्धकारिणी ईस्ट इंडिया कम्पनीने व्याजकी गैरेंटी देकर उनको ९९ वर्षका पट्टा करदिया । ईस्ट इंडियन रेल्वे कलकत्तेसे दिल्ली और आगरा तथा जी. आई. पी. रेल्वे बंबई से कल्याण और मेहम तक तैयार हुई । जी. आई. पी. का काम सन्१८५०ई०में आरम्भ होकर सन् ५४ में समाप्त हुआ ॥

---

## अध्याय १०.

## इंग्लैंडका रूस और फ्रांससे विरोध ।

सन् १८२९-३० में रूसने रूमकी ईसाई प्रजाकी ओरसे बखेड़ा उठाकर यूनानको रूमसे स्वतंत्र कर दिया था । इस विषयकी जो सन्धि हुई उसमें इंग्लैंड और फ्रांसका संयोग था । सन् १८४७ई० में एक तुच्छ बातपर इंग्लैंडने यूनानसे लड़ाई ठानना चाहा । यदि पीछेसे मेल न होगया होता तो उस समय यूरोपमें एक भारी संग्राम होनेकी सम्भावना थी । डान पेसिफिको नामक एक पुर्तगाली यहूदीने यूनान पर ३२ हज़ार पौंडका दावा किया। ईसाई धर्मके संस्थापक प्रभु ईसामसीहको फँसाकर रोमन लोगोंके हाथमें देनेवाले और उनका बधकरनेंमें अग्रणी यहूदी जुडास इस्केरपटका तिरस्कार करनेके लिये यूनानमें प्रतिवर्ष ईस्टरके त्योहारपर उसकी मूर्त्ति बनाकर जलादेने की चालथी । सन् १८४७ई० में यूनानकी गवर्नमेंटने यह चाल बंद करदी । इससे यूनानी लोगोंने समझ लिया कि उस राज्यमें अब यहूदियोंका प्रभाव बढ़गया है । डान पेसिफिको उन दिनों एथेन्समें रहता था । यूनानियोंको मालूम था कि वह यहूदी है । उन्होंने अपना धर्मसम्बन्धी वैर लेनेके लिये उसके घरबारका नाश कर-दिया । इस कारण उसने यूनानकी गवर्नमेंट पर दावा किया । यूनानने उसकी

बात न सुनी। वह था तो पुर्तगाली यहूदी किन्तु अंगरेज़ी प्रजा गिनाजाता था। इस बहानेसे इंग्लैंडमें उपनिवेश विभागके मंत्री लार्ड पामर्स्टनने यूनानसे युद्ध ठान दिया अंगरेज़ी सेनाने यूनानका समुद्र किनारा घेरनेके विचारसे प्रयाण किया। लार्ड पामर्स्टनको भ्रम था कि यूनानमें जो फरांसीसी दूत रहता है वही इस झगड़ेका मूल है। यूनानने बीचमें पड़कर इंग्लैंडसे निपटारा करादेनेके लिये फ्रांस और रूससे प्रार्थना करी। और प्राचीन संधिके अनुसार कार्य करनेके लिये दोनोंने इंग्लैंडको समझाया। आरम्भमें लार्ड पामर्स्टनने इस बातको अस्वीकार किया इस कारण फ्रांसने अपना दूत इंग्लैंडसे लौटा लिया। इस बातसे यूरोपमें भयानक संग्राम होनेका भय हुआ। अंतमें इंग्लैंड संभलगया और डान पेसिफिको का झगड़ा यूरोपियन राज्योंके प्रतिनिधियोंकी पंचायतको सौंपना उसने स्वीकार किया। जांच करनेसे विदित हुआ कि डान पेसिफिकोका दावा स्वीकार न करनेमें यूनानने कोई कार्य अनुचित नहीं किया है क्योंकि उसने हानिसे तीस गुना दावा किथाथा। वह बड़ा मूर्ख था। उसने इस दावेमें एकही पलंगका मूल्य १५० पौंड लिखवायाथा। लार्ड पामर्स्टनकी इस कुचालपर इंग्लैंडकी लार्ड सभामें एक निन्दा सूचक प्रस्ताव भी हुआ॥

---

# अध्याय ११.

## इंग्लैंडकी बृहत् प्रदर्शनी, और ब्रह्मदेशका युद्ध।

श्रीमतीके प्रिय पतिके उद्योग और प्रेरणासे सन् १८५१ ई० में देश विदेशके नाना पदार्थोंकी लंडनमें एक बड़ी भारी प्रदर्शिनी हुईथी उसके विषयमें इस पुस्तकमें लिखा गया है। यह कार्य श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनाओंमेंसे था इस लिये यहां पर भी इस विषयमें कुछ लिखना आवश्यक है। राज्ञीपति प्रिंस एलबर्ट शिल्प कलाको उत्तेजना देनेवाली "सोसाइटी आफ़ आर्टस" सभाके अध्यक्ष थे। सन् १८४९ई० के जूनकी ३० तारीखको इस बातका ठहराव कर सन् ५० में श्रीमान्‌की अध्यक्षतामें एक कमीशन नियत हुआ। उसी वर्ष लार्ड मेयरके भोजमें प्रिंस महोदयने अपने ललित व्याख्यानमें इस बातकी आवश्यकता दिखाई। उन्होंने कहाकि—"शिल्प और व्यापारमें मनुष्य जातिने अबतक कितनी उन्नति कीहै इस बातकी ठीक जांच करने और इस कार्यके लिये होनहार उन्नतिके उपाय सोचनेका प्रदर्शनी उत्तम साधन है।" प्रिंसके सीधे और उपयोगी कथन को उस समयके बड़े बड़े लोगोंने उलटा समझा और पार्लिया-

मेंटके अनेक मेंबरोंतकने इस बातमें संदेह किया कि नाना देश और जातिके लोग इस मेलेमे इकट्ठे होनेसे उपद्रव हो जायगा । उस समयके समाचार पत्र भी इसके विरोधी हुए । उन्हों ने लिखाकि मेला देखनेके बहानेसे देश देशके लुचे लफंगे इकट्ठे होजायँगे और उनसे प्रजाकी शांतिका भंग होगा । अधिक उद्योग करने और लोगोंको समझाने बुझानेसे भय दूर होगया और इंग्लैंडकी शिल्पोन्नतिके लिये इसका बहुत अच्छा परिणाम हुआ ॥

अंगरेज़ व्यापारियोंने भारत गवर्नमेंटसे आग्रह पूर्वक कहाकि ब्रह्मदेशके राजा हमारे व्यापारमें विघ्न डालतेहैं । सन् १८५२ ई० में भारतके गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीने इस बातकी जांचके लिये एक सैनिक धूम पोत रंगूनको भेजा । मिस्टर कोमोडर लेम्बर्ट ने वहां जाकर आवामें लाटसाहब का पत्र ब्रह्मदेश के राजा को दिया । राजा ने इसबात पर रंगून के गवर्नर ( सूबा ) को पदच्युत कर दिया क्योंकि अंगरेज व्यापारियों ने उसी पर नालिश की थी । इसकी जगह जो नया सूबा नियत हुआ वह इनलोगों को पहलेवाले की अपेक्षा भी अधिक दुःखदायी जान पड़ा।अंत में कोमोडर लेम्बर्टने राजा का एक जहाज़ खालसे कर लिया । इसपर युद्धआरंभ होगया । कलकत्ते में समाचार पहुँचतेही ८ हज़ार सेना विदा हुई । सेना ने आकर रंगून बेसिन और प्रोम को एक २ करके छीन लिया और ब्रह्मी लोगों को उत्तर ब्रह्मा की ओर भागना पड़ा । पेगू के परगने पर सरकारी अधिकार होने बाद लार्डडलहौसी ने ब्रह्मदेश के राजाके विषय में एक नोटिस लिखा कि आवा ( ब्रह्मदेश ) का राजा यदि पहले की तरह ब्रिटिश गवर्नमेंट से मित्रता का संबंध प्रचलित न करैगा और पेगूका परगना जो हमने लेलिया है उसे लौटानेका प्रयत्न करैगा तो उसको कठोर दंड दिया जायगा । उसका राज्य छीन लिया जायगा और उसे तथा उसकी संतान को नष्ट भ्रष्टकर देश निकाल देदिया जायगा । इस नोटिस को पानेके अनंतर राजाने किसी प्रकार के संधिपत्र पर हस्ताक्षर तो न किये किन्तु मुखसे यह स्वीकार करलिया कि जो देश वा स्वत्व अंगरेजों को लेना हो लेलें इसमें मैं हस्ताक्षेप नहीं करूंगा । इरावदी नदी में स्वतन्त्रता से अंगरेजों के व्यापार करने को भी उसने स्वीकार कर लिया।गवर्नर जनरल ने दूसरा नोटिस प्रकाशित कर उसमें लिखा कि" राजा ने संधिपत्र पर हस्ताक्षर तो नहीं किये हैं किन्तु उसके प्रण और शांति के कामों को देखकर युद्ध बंद कियागया है "॥

# अध्याय १२.

## ईस्टइंडिया कंपनी का नवीन पट्टा ।

सन् १८५३ ई० में ईस्टइंडिया कम्पनी के पट्टेकी अवधि पूरी होगई । ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उसे दूसरी सनद देनेका विचार किया। सर चार्लेस उड्ने इस विषय में ३ जून को पार्लियामेंट में एक बिल उपस्थित किया । मदरास की नेटिव एसोशियेशनकी ओर से ईस्टइंडिया कंपनी के विषय में पार्लियामेंट में एक प्रार्थना पत्र गया था । उसमें कंपनी के प्रबंध की निन्दाथी । उसमें लिखा था कि कंपनी न्याय का काम ठीक २ नहीं करती है । इसका उत्तर उक्त साहब ने यह दिया कि—भारत वर्ष में एक २ आने के लिए झूंठे शपथ खानेवाले साक्षियों की बहुतायत है इसलिये न्यायका काम बड़ा कठिन है तथापि यह काम वहां प्रशंसाके योग्य होताहै । प्रजाके काम पर वहां खूब ध्यान दिया जाताहै । १ करोड़ ४० एकड़ भूमि सींचनेके योग्य तैयार की गई है । भारत गवर्नमेंटको विशेष आय भूमिकरसे है । लवण और अफीम परभी करलिया जाताहै । लवणकर जैसा कठोर बतलाया जाताहै वैसा नहीं है । मुसल्मान और देशी राजाओंके शासनके साथ ब्रिटिश राज्यकी तुलना कीजाय तो अंगरेजी राज्यमें दासव्यापार, सतीदाह, बालहत्या, नरबलि, तथा लूट खसोट नहींहोतीहै । किसानबड़े सुखीहैं अब वे जीवनकी आवश्यक वस्तुयें अधिक वर्तने लगेहैं । सन् १८३४—३५ ई० में भारत में ७९ लाख ९३ हजार पौंडका माल बाहरसे आयाथा । पंद्रह वर्षके बाद इस आयमें सौ पीछे १४० की वृद्धिहोकर सन् १८४९—५०ई० में १ करोड ७३ लाख १३ हजार पौंड का माल आया । कंपनी अब अपने प्रबंधमें कुछ लौटफेर करना चाहतीहै । उसने विचार कियाहै कि डाइरेक्टरोंकी संख्या घटाकर ३० की जगह १८ रक्खी जाय और इनमें ६ ऐसे रहें जो दश वर्ष तक भारतमें रहकर ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सेवा कर आयेहों । सरकारी नौकरीपर अबसे कंपनी किसीको नियत न करसकैगी किन्तु सिविल सार्विस परीक्षा सब जातिके लिये खुली रक्खी जायगी । नौकरी पानेका स्वत्व गरीब अमीरके लिये समानहोगा । सैनिक पदोंकी व्यवस्था में तो परिवर्त्तन न होगा किन्तु बंगालकी गवर्नरी स्वतंत्र नियत की जायगी । आईन बनाने वाली सभामें गवर्नर जनरल दो सभासद अपनी ओर से और प्रत्येक प्रान्तका व्यापारी समाज अपनी ओर का एक २ सभासद नियत

करैगा । इसके सिवाय हाईकोर्टका चीफ् जस्टिस और अन्य जज मिलाकर कुल १२ सभासद होंगे प्रान्तोंके प्रत्येक नगरमें छोटी कोर्टें नियत होंगी और देशी-न्यायाधीशोंका वेतन बढ़ाया जायगा । " इसबिलके विषयमें पार्लियामेंटमें बहुत विवाद हुआ । कामन्स सभामें सर ज्यार्ज क्लार्कनें हिन्दुओंकी नीतिमत्ताको सराहा । और कहाकि सतरहवीं शताब्दिकी चाल ढाल देखकर भारतके अंगरेज जैसे भारत वासियोंकी निन्दाकरतेहै वैसीही निन्दाके योग्य उस समयके अंगरेज़ भी थे । मिस्टर फिलिमोर ने कहाकि सन् १८३३ई० के प्रतिज्ञापत्रमें लिखे जातिभेद विना सब लोगोंको समान गिनने के कार्यपर कंपनी ध्यान नहीं देतीहै। देशियोंकी निन्दा करने में मिस्टर ( लार्ड ) मेकाले प्रसिद्ध गिने जातेहैं । उन्होंने कहाकि— "देशियोंको भारत वर्षके प्रबंधसे अलग रखनेके प्रयत्न में उनकी प्रवृत्तिका भंग कर हम लोग अपने शासन को दृढ वा दीर्घ काल तक चलने योग्य नहीं बना सकैंगे । उन्हें वशमें करनेके लिये अथवा उनपर अधिक काल तक शासन करनेका स्वत्व वा अधिकार प्राप्त रखनेके लिये उन्हें अज्ञान रखना मैं कभी अच्छा नहीं समझताहूं" ॥

---

# अध्याय १३.

## नागपुरका खालसा और भारतमें तार ।

### तीन आविष्कार ।

सन् १८५३ ई०में गवर्नमेंटनें नागपुर राज्य खालसे करनेका ठहराव किया । वहांके राजा राघोजी भोंसला इस वर्षमें अपुत्र मरगये । लार्ड डलहौसी उससमय भारतवर्षके गवर्नर जनरल थे । वह चाहतेथे कि शनैः २ समस्तदेशी राज्य खालसे कर लिये जाँय और किसी राजाको गोद लेनेकी सनद नदी जाय । उन्होंने नागपुरके राजाके अपुत्र मरनेसे गादी खाली होतेही अपनी नीतिका पालन किया । और उसीके अनुसार एक आज्ञापत्र प्रकाशितकर नागपुर राज्यको सरकारी राज्यमें मिला लिया । सन् १८५७ ई० में भारतवर्ष में जो उपद्रव हुआ उसके अनेक कारणोंमेंसे एक लार्ड डलहोसीकी यह नीति भी मानी जाती है ॥

भारतवर्षमें रेल्वे बनानेका कार्य जिससमय जी. आई. पी. और ईस्ट इंडियनरेल्वे कंपनीने आरंभ किया तबही तारका कार्य आरंभ हुआ था । सन् १८५०–५१ ई० में गवर्नमेंटने प्रथम बंगालमें तारघर स्थापितकिये । दूसरे ही वर्ष ६२१९० ) रुपयेके व्ययसे ८३ मील लाइन तैयार हुई । बंबई तथा

मद्रास प्रान्तमें यह कार्य सन् ५४ में हुआ। सन् ६७-६८ में भारतवर्षमें तार विभाग द्वारा ३०२१९१ समाचार आयेगयेथे और उस वर्ष भारतभरमें कुल १३४७३॥ मील तारकी लाइन थी॥

सन् १८४६ में परीक्षाके बाद यह निश्चय हुआ कि सल्फ्यूरिक ईथरके प्रयोगसे रोगीके शरीरपर किसी प्रकारकी कठोर चीरफाड करनेपरभी उसे उस का दर्द विदित नही होताहै। और इस दवाको सुंघानेसे रोगी बिलकुल अचेत होजाताहै। इसबातके प्रकाशित होतेही लोगोंके हर्षका ठिकाना नरहा किन्तु इस से भी बढ़कर "क्लोरो फार्म" निकला। इसकी जांच सन् १८४७ ई० में हुई। दोनो पदार्थोंकी तुलना करनेसे जानपड़ा कि ईथरकी अपेक्षा क्लोरोफार्मकी थोड़ी मात्रा अचेत अधिक करदेतीहै, उसका प्रमाण अधिक शीघ्र और पूरा २ होता है, आधिक समयतक टिकता है और उससे रोगीको प्रलाप नहीं होता है। उसमें खर्च कम होता है और केवल रूमाल पर छींटकर सुंघादेनेहीसे मनुष्य अचेत होता है किन्तु ईथरमें यंत्रकी आवश्यकता होतीहै॥

खगोल शास्त्रके विषयमें दो बड़े आविष्कार सन् १८४५ और ४६ई० में हुएथे। एस्ट्रिया, नेपच्यून और यूरेनस ग्रहकी शोधहोचुकीथी। इन वर्षोंमें फ्रेंच और जर्मन विद्वानोंने ही बी, एरिस, और क्लोरा नामक ग्रहोंकी गति का निश्चय किया। इसी वर्षमें पांच धूमकेतु ग्रहोंकी चाल मालूम हुई। और सन् १८४८ई० में 'मेटिस' सन् ४९ में "हाइजिया बारबनिकडा" सन् ५० में 'पार्सेनोपी' 'विक्टोरिया' और 'इगेरिया' ग्रहका शोध हुआ। इनके सिवाय शनिग्रहके अष्टमं उपग्रह और नेपच्यूनके एक उपग्रहका आविष्कार भी इसी वर्षमें हुआ॥

ये साल नवीन शोधोंके विषयमें बहुत बढ़कर निकले। सन् ४६ और ४७ में रसायन शास्त्रके विषयमें तीन बड़े २ आविष्कार हुए। प्रथम शोध 'गनकाटन' बारूदकी, दूसरी काचको झुका वा मरोड़ सकनेकी और तीसरी कागज़की बोतलें वा किंवाड बनानेकी। इस शोधके अनुसार पानी भरनेसे कागज़ गलता नहीं है। कागज़से बने हुए पात्र धरतीपर डालनेसे नहीं टूटते हैं और इसपर तुर्रा यह कि वेपारदर्शक होते हैं॥

---

## अध्याय १४.

## क्रीमियाका युद्ध।

सन् १८५४ ई० का वर्ष यूरोपके लिये बड़ा भयानक था। रूम राज्यके अनेक प्रान्तोंमें रूसीधर्म मानने वाले (रूसवालेके वंशधर) लोग निवास करते थे।

उन लोगोंके साथ रूमका जैसा बर्त्ताव था वह रूसको पसंद न था । रूस समझता था कि रूमके ईसाइयोंकी रक्षा करनेका काम मेरा है । रूसने इस विषयमें रूमकी जो निन्दाकी उसे अन्य यूरोपियन राज्योंने सच्चा समझा परंतु उनको संदेह हुआ कि कहीं ऐसी बातके बहानेसे रूस किसीभारी राजनैतिक लाभके लिये चालतो नहीं चलरहा है । इस भयसे उन्होंने रूसकी बातका समर्थन करनेके बदले उसकी योजनाको भंग करनेका प्रयत्न किया । रूसकी गवर्नमेंट अल्पकालमें छोटेसे राज्यसे एक बृहत् साम्राज्य बनगया था ! यूरोपमें ऐसा जनरव था कि रूस राज्यका संस्थापक पीटर दी ग्रेट आपने वसीयत नामेमें लिखगया है कि मेरे उत्तराधिकारियोंको जहांतक बालटिक समुद्रसे उत्तरकी ओर और काले समुद्रके किनारेपर दक्षिणकी ओर सीमा स्थापित करनेका अवसर न मिलै चुप न रहना चाहिये । इस कारण बड़े राज्योंने अनुमान किया कि रूमके विषयमें बखेडा कर रूस उसका कुस्तुनतुनिया और बासजरस लेना चाहता है इस लिये उन्होंने निश्चय किया कि रूमके अप्रबंधसे रूसको लाभ उठाने देना उचित नहीं है । रूस शनैः २ भारत लेनेकी इच्छासे मध्य एशियामें अपनी सेना बढ़ाता जाता था इस लिये उसकी यह चाल इंग्लैंड को अधिक बुरी लगी । इंग्लैंडने सोचा कि, रूसका विरोध करनेके लिये रूमसे मेल करना चाहिये । और रूस रूमके युद्धमें इंग्लैंडको रूमका साथ देना उचित है । इस विचारमें फ्रांसके नवीन सम्राट् नेपोलियन ने साथ दिया । उसने अपने विचार कौशलसे फ्रांसका राज्य प्राप्त किया था और वह जानता था कि जबतक मैं किसी कार्यसे वहांकी प्रजाको प्रसन्न न करसकूंगा मेरा टिकाव होना कठिन है ॥

ईसाई धर्मके अनेक स्थान रूम राज्यमें थे । इन पर आधिपत्य रखने के विषयमें रूस और फ्रांसका झगड़ा था । इसका निपटारा करानेके लिये फ्रांस इंग्लैंडके संयुक्त हुआ । दोनोंने मिलकर रूमकी ओरसे रूसके साथ युद्ध निश्चय किया । दोनोंनें रूससे कहलाया कि सन् १८२७–२८ में रूसने रूमके साथ जैसा बर्त्ताव किया था वैसा अब न करने दिया जायगा । हमारे जहाज़ काले समुद्रमें जाएँगे । वहांपर यदि कोई रूसी जहाज़ मिलेगा तो हम उसे सेवस्टोपलकी ओर लौटादेंगे और रूम राज्यपर किसी प्रकारका बलात्कार रूसको न करने देंगे । इस बात से युद्ध ठनगया । जर्मनी ( प्रूशिया ) और आस्ट्रिया इंग्लैंडके मित्र गिनेजाते थे परंतु इस अवसर पर वे अलग होगये । इंग्लैंडके प्रधानमण्डलमें भी इस विषयमें मतभेद हुआ । लार्ड एबर्डीन और

मिस्टर ग्लैडस्टनने इस युद्धका विरोध किया परंतु इंग्लैंडकी प्रजाका अधिक भाग युद्धमें कीर्त्ति सम्पादन करनेकी तृष्णासे युद्ध करनेकी सम्मतिमें लार्ड पा-मर्स्टनका साथी हुआ। उनकी सम्मतिके अनुसार १४ सितम्बर सन् १८५४ ई० को युद्धका आरम्भ होगया। और भीषण संग्रामके बाद सन् १८५६ ई० के फरवरी मासमें इसका अन्त हुआ। दोनों ओरकी सेनाओंने बहुत वीरता दिखाई किंतु इंग्लैंड, फ्रांस और रूमकी संयुक्त सेनाके सामने रूसी सेना टिक न सकी। परिणाम यह हुआ कि रूसने सन्धिका प्रस्ताव किया। इस बातका ठहराव करनेके लिये फ्रांसकी राजधानी पैरिस नगरमें इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, आस्ट्रिया, प्रशिया और सार्डीनिया ( इटाली ) राज्यके प्रतिनिधियोंने मिलकर निम्नलिखित शर्तें पक्की की—( १ ) रूमके प्रबन्धमें हाथ डालनेका रूसको दावा न करना चाहिये ( २ ) काले समुद्र पर किसी राज्यका अधिकार नहीं है और वहां छः से अधिक जहाज़ रूस न रखसकेगा ( ३ ) डैन्यूब नदी व्यापारके लिये खुली रखनी होगी ( ४ ) रूमके मालडेविया और वेल्केयाना प्रान्त ( रोमेनिया) और सर्वियाके प्रान्तोंको प्रजाशासनका अधिकार देना और सर्वियामें रूमको सेना रखने देना और ( ५ ) परस्परके जीते हुए राज्य जिसके जिसे देदेना होगा" ॥

---

# अध्याय १९.

## क्रीमियाके युद्धके समय इंग्लैंडकी स्थिति।

यद्यपि इस अध्यायमें प्रायः उन्हीं बातोंका समावेशहै जिनका वर्णन इस पुस्तकके प्रथम भागमें होना चाहिये था किन्तु क्रीमिया का विषय एकत्र रहनेसे पाठकोंके चित्तपर बात अच्छी तरह ठसती समझकर यहांपर लिखना उचित समझा गयाहै। जिस समय क्रीमियाके युद्धमें रूससे विजय पानेकी इच्छासे इंग्लैंडकी सेना ड्यूक आफ़ केम्ब्रिज़के अधिकारमें विदाहुई श्रीमती उसका सत्कार करनेके लिये स्वयं गई थीं। एक ओर युद्धके लिये बड़े २ राज्योंके प्रधान कर्मचारी अपने शिर पचा रहे थे और दूसरी ओर राजाओं में परस्परका मेल मिलाप होता था। इसी बीचमें राज्ञीपति प्रिंसएलबर्ट फ्रांसके नवीन सम्राट् नेपोलियनसे मिलने गये। वहांसे लौटनेपर मालूम हुआ कि अध्यक्षोंकी बेपरवाहीसे ब्रिटिश सेनाके मनुष्य बहुत दुर्दशासे नष्ट होते हैं। गवर्नमेंटने इस बातपर सेनाध्यक्षोंको बहुत लथाड़ा और महारानीके चित्तमें

इतना दुःख हुआ कि वह इस संवादको सुनकर बीमार होगई । मिस फ्लोरेंस नाइटिंगेलने जिसका कुछ वर्णन इस पुस्तकके पूर्व अध्यायों में हुआहै जाकर साहस और परिश्रमसे घायल सैनिकोंकी सेवा सुश्रूषाकर हजारोंके प्राण बचाये ॥

ब्रिटिश और फ्रांसकी संयुक्त सेनाकी बहुत हानि होनेपर भी जब रूसने तोपों की मार सहने उपरांत सेबस्टोपलका किला न छोड़ा तब इंग्लैंडको बहुत निराशा हुई और इस बातका विचार करनेके लिये पार्लियामेंटमें एक बिल उपस्थित हुआ किन्तु उसी समय रूसके सम्राट् दूसरे निकोलसकी अकस्मात् मृत्यु होगई इस लिये क्रीमिया युद्धका शीघ्रही अंत होगया । युद्धसे घायल होकर लौटे हुए सैनिकोंको श्रीमतीने चेथामके अस्पतालमें देखकर उनका समाश्वासन किया ॥

इसी अवसरमें फ्रांसके नवीन सम्राट् लुई नेपोलियन अपनी रानी सहित श्रीमतीसे भेट करनेके लिये इंग्लैंड आये । श्रीमतीने उनका बहुत सत्कार किया और सत्कारकी वृद्धिके लिये नेपोलियनने सम्मानपूर्वक श्रीमतीके होठोंका चुंबन किया । इस बातसे फ्रांसमें प्रजा तंत्रप्रणाली स्थापन करनेकी इच्छा रखने वाले पक्षको बहुत बुरा लगा और उन्होंने नेपोलियनपर गालियोंका मेह बरसाया । नेपोलियनके सन्मानमें वाटर्लू महलमें एक नाच हुआ जिसमें उन्होंने बहुत योग्यता दिखाई । इस विषयमें श्रीमती ने अपनी दिनचर्या में लिखा है कि " मैं तीसरे ज्यार्जकी पौत्री इंग्लैंडके कट्टे शत्रु सम्राट् प्रथम नेपोलियनके भतीजेके साथ, वाटरलू के राजभवन में, उस व्यक्ति के साथ जो छः वर्ष तक देश विदेश भटक कर इंग्लैंड का आश्रय लेचुका है नाचूं, इसे ईश्वर की विचित्र लीलाही समझना चाहिये ।" इस अवसर पर श्रीमती ने सम्राट् को नाइट आफ़ दी गार्टरकी उपाधि प्रदान की ॥

अच्छीतरह दावत चखने बाद जब सम्राट् नेपोलियन फ्रांसको गया श्रीमतीने क्रीमिया के युद्ध में पराक्रम करनेवाले सैनिकों को पदक, पारितोषिक और पदवियाँदीं । इनमें अनेक लूले, लंगड़े, हाथ बिनाके और अंगभंग थे दशा और श्रीमती की सेवा में उनकी यह दशा हुई थी इसालिये आपको बहुत दुःख हुआ । आँखों में पानी भरआया । श्रीमती के हाथ से पदक पाकर उन्हें बड़ा संतोष हुआ । थामस टाऊब्रिज नामक शूरको जिसके दोनों पैर इसयुद्ध में कटगये थे आपने अपना शरीर रक्षक ( एडी कैंप ) बनाया ॥

सितंबर मास में सेबलस्टोपल नामक दृढ दुर्ग घोर संग्राम के पश्चात् इंग्लैंड के हाथ आने की जब खबर पहुंची प्रजाके हर्ष का ठिकाना न रहा । बालमोरल

में निवास करनेवाले लोगों ने एक पहाड़ीपर चढ़कर आग जलाई । श्रीमती अपने महलकी खिड़कीमें से खड़ी २ इस अद्भुत दृश्यको देखती रहीं । वहांके ग्रामीण लोगोंने उस अग्निके पास अद्भुत प्रकारसे नाच किया, गाया, ढोल बजाये और बंदूकों के फेर किये। क्रीमिया से विजय प्राप्त कर लौटी।हुई सेना का श्रीमती ने एल्डरशाट में निरीक्षण करते समय कहा:-"आज यहांपर एक वृहत् सेना इकट्ठी हुई है। उससे मेरा कथन है कि वह पूर्ण आरोग्यताके साथ लौट आई जिसका मुझे हर्ष है। उसने कष्ट और विपत्ति उदारतापूर्वक सहन की है उसके लिये धन्यवाद देनेको मैं बहुत आतुर थी। और जो लोग अपने देश के लिये मृत्यु को प्राप्त हुए हैं उनके लिये मैं दुःखित हूं। और इसीतरह जिन्हों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया है उनेक लिये मुझे बड़ा गर्व है। मैं परमेश्वर का उपकार मानती हूं कि अब भयके बादल विखर गये हैं। आपलोगों के यशस्वी कर्म की कीर्त्ति सदा रहैगी और मुझे आशा है कि फिर जब कभी आवश्यकता पड़ैगी जिसका मुझे भरोसा है क्रीमियाके युद्ध में आत्मसमर्पण करनेकी तरह फिर भी आप लोग प्रेम पूर्वक देश सेवा करनेके लिये तत्पर होगे।" इस आज्ञाको सुनकर सेनाने श्रीमतीके लिये एक स्वरसे "ईश्वर श्रीमतीकी रक्षा करै।" इस वाक्यको कहा॥

---

# अध्याय १६.

## रूमकी रक्षामें तीन राज्योंका मेल।

इस भागके अध्याय १४ में जिस संधिका वर्णन हुआ है उसके सिवाय सन् १८५६ ई० के अपरेलमें इंग्लैंड, फ्रांस और आस्ट्रियामें रूमके विषयमें एक संधि और हुई थी जिसमें २ शर्तें थीं (१) तीनों राज्य रूम राज्यकी रक्षाका बोझा अपने ऊपर लेते हैं और (२) पैरिसमें ३० मार्चको जो संयुक्त राज्योंका इस विषयमें संधिपत्र लिखा गया उसके नियमोंका भंग जो कोई करैगा उससे हमतीनों मिलकर लड़ेंगे। सन् १८७१ ई० तक इस संधिका बर्त्ताव ठीक २ होता रहा। सन् ५६ ई० की ३० मार्चको सब राज्योंने मिलकर पैरिसमें जो संधि की थी उसमें एक शर्त यह भी थी कि "काले समुद्रको स्वतंत्र गिनना और वहां रूसको मेगजीन तथा छःसे अधिक सैनिक जहाज़ न रखने देना चाहिये"। सन् ७१ ई० में इस संधिका भंग होगया। और प्रकाश रूप पर रूसने कह दिया कि"अब हम इस बातके नियम बद्ध नहीं हैं। इस संधिपत्रकी

अनेक शर्तोंको और २ राज्यों ने भंग कर डाला इस लिये केवल हम पर ही इसके निर्वाह का दबाव डालना न चाहिये'। उन दिनों में फ्रांस और जर्मनीका घोर संग्राम हो रहाथा। इस लिये दोनों राज्य इस काममें न बोलसके। इसी तरह इंग्लैंडने भी इन दोनों राज्योंको युद्धसे आना कानी करते देखकर रूससे एका· की लड़नेका साहस न किया। आस्ट्रिया बिल्कुल ही चुप साध गया। परंतु पैरिसके संधिपत्रकी बात हवामें उड़ाकर चुप रह जानेसे निंदा समझ कर प्रिंस विस्मार्कने एक चाल खेली। उनकी सूचनाके अनुसार रूसके अनुचित कार्य पर विचार करनेके लिये लंडनमें एक सभा हुई। इसमें बड़े २ राज्योंके प्रतिनिधि इकट्ठेहुए।इन्होंने निश्चय किया कि "रूसने जो मार्ग ग्रहण किया है वह अनुचित नहींहै और उसके विरुद्ध कोई काम न करना चाहिये।" इस बातके प्रकाश होतेही रूसने रूमको दबा लिया और रूस रूमकी लड़ाईमें रूमकी हार होनेका इसीसे अवसर आया। केवल इतनाही नहीं किन्तु इस कार्यमे रूस बहुत बढ़गया और यह भी कहा जाता है कि यूनानके विरुद्ध रूमकी ओरसे सब राज्योंने पक्ष किया जिसका कारण भी यही संधिपत्र है ॥

---

# अध्याय १७.

## अवधका खालसा।

सन् १८५६ ई० के फरवरी मासमें अवधके नव्वाबका राज्यखालसे कर वाजिद अलीशाहको गवर्नमेंटने पेन्शन देदी। इस कार्यमें नियम विरुद्ध चाल चलनेके कारण सरकार पर जो आक्षेप होता उससे बचनेके लिये भारत वर्षके गवर्नरजनरल ने एक आज्ञापत्र प्रकाशित किया जिसमें लिखाथा कि "अवधके नव्वाबसे जिन बातोंमें संशोधन करनेकी सम्मति दीजातीहै उनपर ध्यान नहीं देतेहैं और उस राज्यमें लूट खसोट बहुत होतीहै। इन कारणोंसे अयोध्याका उपजाऊ प्रदेश नष्ट हुआ जाताहै।" गवर्नरजनरलने आरंभमें नव्वाबसे (१) अवधकी दीवानी फौजदारी तथा सैनिक सत्ता सदाके लिये अंगरेजी सरकारको देनाहोगा (२) नव्वाबका पद सदा स्थिर रखना और यह पद वंशपरंपरा तक चलने देनाहोगा (३) नव्वाबके साथ सम्मानपूर्वक वर्त्तना और लखनऊके महल तथा दिलखुश और बीबीपर बागमें केवल नव्वाबका अधिकार रहेगा किन्तु मृत्युका दंड देनेकाउन्हें अधिकार न होगा (४) नव्वाब वाजिद अलीशाहको उनकी प्रतिष्ठाकी रक्षाके लिये बारह लाख रुपये वार्षिक और महलकी रक्षाके लिये तीनलाख रुपया वार्षिक

गवर्नमेंटसे दिया जायगा और (५) उनके उत्तराधिकारियोंको बारह लाख वार्षिक पेन्शनके अतिरिक्त उनके पुत्र कलत्रादिके वेतनका स्वतंत्र प्रबंधकिया जायगा—इन शर्तोंसे संधि करना चाहाथा। इस संधिपत्रपर हस्ताक्षर करने के लिये नव्वाबको तीन दिनकी अवधि दीगईथी। अवधि समाप्त होने उपरांत नव्वाबने संधिपत्र पर हस्ताक्षर नहींकिये। बस इसलिये अपनी आज्ञाके अनुसार गवर्नमेंटने अवध प्रदेशमें खालसा करलिया। नव्वाबको बारह लाखकी पेन्शन दी गई जिसे उन्होंने आक्टूबर माससे स्वीकार कर लिया। उससमय सरकारने यहभी प्रकाशित किया कि नव्वाब साहब जब तक जियेंगे उनका नव्वाब पद बनारहैगा किन्तु उनके पीछेसे उनके उत्तराधिकारी इस पदके अधिकारी न होंगे। और न उनके समान वार्षिक पेन्शन उनके उत्तराधिकारियोंको दीजायगी॥

यह बात अवधकी प्रजाको पसंद न आई। एकवर्षबाद नानासाहबकी प्रेरणासे जो बलवा हुआ उसमें लखनऊकी सेनाका अधिक भाग बलवा करने में था और अयोध्या ही इस उपद्रवका केन्द्रथा। नेपालके जंगबहादुरने ९ हजारसेना भेजकर अवधका उपद्रव शांतकिया। और उनकी सहायतासे सरकारने अवधका राज्य फिर प्राप्तकिया॥

---

# अध्याय १८.

## ईरान और चीनसे गवर्नमेंटके युद्ध।

इसी वर्षमें भारतगवर्नमेंटको ईरानराज्यसे लड़ाई करनी पड़ी। ईरानराज्यने हिरातपर चढ़ाई कर सन् १८५५ ई० की २५ आक्टूबरको उसपर अपना अधिकार करलियाथा। भारत गवर्नमेंट उसकी इसचालको पसंद न करसकी क्योंकि गवर्नमेंटका कथनहै कि अफ़गानिस्तान और हिरात पर भारत वर्नमेंटके सिवाय दूसरे किसी का आधिपत्य नहीं है। इस युद्धमें ईरान राज्यकी हार हुई। और उसे लाचार होकर भारत गवर्नमेंटसे संधि करनीपड़ी। ईरानके साथ जो संधिपत्र हुआ उसकी शर्तें ये थीं—"हिरात नगर और अफगानिस्तानकी भूमि पर आधिपत्यका दावा ईरान राज्य छोड़ताहै, हिरात और अफ़ग़ानिस्तानके राजाओंसे करलेने अपने नामपर खुतबा पढ़वाने और अपने सिक्के का वहां प्रचार करनेका दावा उसे अब स्वीकार नहीं है। और स्वीकार करताहै कि अबसे पीछे अफ़ग़ानिस्तानके स्थानीय कामकाज में न पड़ूंगा और हिरात तथा अफ़ग़ानिस्तानको स्वतंत्र गिनूंगा। अबसे अफ़गानिस्तान और हिरात राज्यके झगड़ोंका निपटार करनेके अंगरेज़ी सरकारको पंचायत

करना चाहिये ।" इस लेखपर हस्ताक्षर करने बाद अंगरेज़ राजदूतके तेहेरानके पीछे पहुंचने पर पहले अपमानोंके लिये ईरानका क्षमा मांगना ठहरा । सुना गयाहै कि ईरान शाहनेके अंगरेज़ दूतके विषयमें अपने प्रधान अमात्यको लिखाथा कि–" मिस्टर मरे मूर्ख और पागलहैं क्योंकि राज्योंका तक का अपमान करना उसने सीख लियाहै । और वह ऐसी मूर्खता करने लगाहै "॥

ईरान युद्धकी समाप्ति होतेही चीनपर चढ़ाई करनेका अवसर आया । चीन गवर्नमेंटपर अभिशाप यह लगायागया था कि उसने अंगरेज़ी झंडेका अपमान कियाहै । 'एरो' नामक जहाज़ में ७ अक्टूबर सन् १८५६ ई० को कितनेही चीनी कर्मचारी आये और उस जहाज़ मेंसे बारह मनुष्योंको पकड़लेगये । जहाज़के मालिकने उसपर अंगरेज़ी झंडा चढ़ाकर यह प्रकाशित किया कि यह जहाज़ अंगरेज़ीहै और चीनने इसका अपमान कियाहै । इसबातको चीनने न सुना और कहदिया कि "यह अंगरेज़ी जहाज नहीं है किन्तु चीनी जहाज़है । और इसे अंगरेज़ी झंडा चढ़ानेका अधिकार नहींहै।"मिस्टर जस्टिस मेकार्थी ने अपने इतिहासमें लिखाहै कि"चीन गवर्नमेंटका कथन सत्यथा। और जहाज़के मालिकने अपने लाभके लिये थोड़े समयके लिये कहींसे झंडा प्राप्तकरलियाथा।"परंतु कंटानके बंदरका अंगरेज़ी दूत बखेड़िया था और इसलिये उसने पेकिन स्थित मुख्यदूतको झूठी खबर देकर बहँका दिया था।जिस समय इस बातकी ख़बर इंग्लैंडमें पहुँची वहांके कितनेही राजनीतिज्ञोंने इस चालकी बहुत निन्दाकी थी परंतु लार्ड पामर्स्टनने एक ऐसा नियम प्रकाशित किया कि–"हम सच्चेहों वा झूँठे किन्तु अब तो अपनी टेकका निर्वाह करनाही चाहिये । " इस नियमको कितनेही स्वार्थी अंगरेज़ोंने पसन्द किया इसकारण पार्लियामेण्टमें पामर्स्टनके विरोधी न टिकसके । युद्धके अन्त में ब्रिटिश गवर्नमेंटका विजय हुआ । पांच बंदर फिर यूरोपियन व्यापारके लिये खोलनेका चीनपर दबाव पड़ा । और ईसाई पादरियोंको चीन राज्यमें धर्मोपदेश करनेकी स्वतन्त्रता मिलगई । इसी स्वतन्त्रता ने अनेक बार चीनमें लाखों ईसाइयोंका नाश करार चीन राज्यको मिट्टीमें मिलादिया ॥

---

## अध्याय १९.

## भारतवर्षका बलवा ।

क्रीमियांके युद्धमें हजारों मनुष्योंके नष्ट होनेसे खिन्न और विजयसे हर्षित इंग्लैंडकी प्रजाको जो सन् ५७ के बलवेकी एकाएक ख़बर मिली । उस वर्षसे

पहले भारतमें श्रीमतीका स्वतन्त्र शासन न था। किन्तु ईस्टइंण्डिया कम्पनी राज्य करती थी। भारतके प्रबन्धपर विलायतका कुछभी ध्यान न था। पार्लियामेंटको सेक्रेटरी आफस्टेट जिधर चलाते उधर चलती थी। लार्ड डलहौसी की रजवाड़ोंको खालसे करनेकी नीतिने देशमें हलचल मचा रक्खी थी। सन १८५६ ई० में उनके उत्तराधिकारी लार्ड केनिंगूने शांति स्थापन करनेका बहुत कुछ प्रयत्न किया परंतु उनकी कुछ चली नहीं। और सन् १८५७ ई० के मई मासमें भारतवर्षमें बलवेकी आग एकदम भड़क उठी। इसके कारण अंगरेज़ ग्रंथकर्त्ताओंने जो दिखलाये हैं। उनमेंसे थोड़े ये हैं उनका कथन है कि भारत गवर्नमेंटने बहुतही अविचार और भूलभरी नीतिका अवलम्बन कियाथा। अफगानिस्तानकी चढ़ाईमें हारखाना, सिंध, पंजाब और नागपुरका खालसा और अवधको सरकारी राज्यमें मिला देना आदि कामोंसे प्रजाके चित्तपर बहुतही बुरा प्रभावपड़ा। बंगालकी सेनामें अधिक लोग अवधके रहनेवाले थे। वे लोग अवधमें सरकारी राज्य स्थापित करनेसे बहुतही दुःखित होगये थे। सेना और प्रजाके मनमें सरकारकी नीतिपर सन्देह होगया।इस अवसरमें गवर्नमेंटने एक नवीन प्रकारकी बंदूक सेनामें प्रचलितकी उसका कार्तूस हाथसे तोड़नेके बदले दांतसेकाटना पड़ताथा।सिपाहियोंको संदेह होगया कि ये कार्तूस गौ और सूअरकी चर्बीसे बनाये गये हैं और इन्हें दांत से कटवाकर सरकार हिन्दू मुसलमान सैनिकों का धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। प्रसिद्ध इतिहास कर्त्ता मिस्टर टालवाइज ह्वीलरने लिखा है कि—“ प्रमादवश कार्तूसों में गौ और सुअर की चर्बीका उपयोग हुआ था। सिपाहियोंने अज्ञानवश यह समझ लिया कि, अंगरेज़ लोग जान बूझकर हमारा धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। दुर्भाग्यसे उनका भ्रम दूरकरने का सैनिक अफसरोंने शीघ्र प्रयत्न न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि, कलकत्ते के निकट बारकपुर की सेना में हलचल मचगई। वहां के सैनिकों ने मकानों में आग लगादी। इसबात से सेनाध्यक्षकों की आँखें खुलगईं और उन्होंने चर्बीवाले कार्तूसोंको बिलकुल बंद करनेकी आज्ञादी। परन्तु आगलग चुकी थी इसलिये सिपाहियोंने किसीभी प्रकार के कार्तूस पर विश्वास न किया”। इसके सिवाय यह भी कहा जाता है कि, रेलवे लाइने और तारको देखकर मूर्ख लोगोंने यह संदेह किया कि, सरकार हमें जादूसे वश करना चाहती है। बस कई एक इसबातको भी बलवे के अन्य कारणों में से एक समझते हैं॥

बलवेकी आग प्रथम मेरठ में भड़की । वहांके बलवाइयों ने अंगरेज अफ्सरों पर गोलीमार कर कितनेही अंगरेजों का बधकरडाला । मेरठकी सेना वहांसे बलवाकर दिल्ली पहुंची । वहां जाकर उसने दिल्ली सम्राट् के एक वंशधरको जो सरकार से पेन्शन पाताथा अपना अफ्सर बनाया और उसीको भारतका सम्राट् निश्चित करलिया । भारतके गवर्नरजनरलने चीन जातीहुई अंगरेज़ी सेनाको उपद्रव की शांतिके लिये रोक लिया। इस सेना के आपहुंचने पूर्व पंजाबके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जान लारैंसने देशी सेनाके शस्त्र छीन लिये और दिल्ली विजयके लिये अपनी विश्वस्तसेना भेजी । सिक्खजैसी वीरजाति जो थोड़ेही वर्ष पूर्व अंगरेजों से लड़चुकी थी गवर्नमेंट की भक्तरहकर तन और मन से सहायक हुई । सिक्ख और यूरोपियन सेनाने बड़ी कठिनता से दिल्ली में शांति स्थापित की ॥

दिल्लीसे चलकर उपद्रव लखनऊ पहुंचा । यह अवधकी राजधानी थी और गवर्नमेंट ने हालही में इसप्रान्त को लेलिया था इसलिये यहां बड़ी हृदयविदारक घटना हुई । बलवाइयों ने मारकूटकर यूरोपियनोंकी स्त्री बालकों सहित रेजिडेंसीके एक बंद मकानमें घेर लिया। इससे भी बढ़कर कानपुर में हुआ । वहां स्त्री बालकों सहित एक सहस्रके लगभग यूरोपियन थे वहांके सरह्यूग व्हीलर सेनापति थे । विठूर के पदच्युत राजा नाना साहब जिनका गवर्नमेंटने गोदलेना स्वीकार नहीं कियाथा उनपर सेनापतिका विश्वास था । उनपर भरोसा कर व्हीलर साहब सब यूरोपियनों को लेकर एक अस्पताल में जिसके गिर्द मट्टीकी दीवालथी घुसबैठे । इनके पास पांचसो से अधिक स्त्री बालक और इनसे कम पुरुष थे । नानासाहबने बलवाइयों में मिलकर अस्पताल को घेर लिया । उनकी गोलियोंसे अस्पतालके भीतर यूरोपियन लोगोंकी लाशें बिछगईं।स्त्री बालकोंको खुलीहुई धूपमें मिट्टीकी दीवारकी शरण लेनी पड़ी । बालबच्चों के सूखे मुख हरे करनेके लिये जो लोग अस्पतालके भीतर कुएँसे पानी लेने गयेथे वे बलवाइयोंकी गोलीसे मरकर कुएँकी शरण हुए। अंतमें नानासाहबने कहदिया कि यदि तुम लोग हमारी शरण आकर अस्पताल खाली करदोगे तो हम तुम्हें यहांसे जीवित निकल जाने देंगे । इसबातको यूरोपियनोंने स्वीकार किया और वे एक नौकामें बैठकर गंगाजीके उसपार जानेलगे परन्तु उपद्रवियोंने वहां भी उनका पीछा न छोड़ा और गोलियां मार २ कर नावके लोगोंको डुबोदिया । जो कुछ स्त्रियां वा बालक बचे बचाये थे उन्हें पकड़कर एक मकान में उनको बुरी तरहसे मार डाला । व्हीलर साहब के साथ के एक हजार मनुष्यों में से अपना दुखड़ा रोनेके लिये केवल चार मनुष्य बचने पाये ॥

इन बातोंको सुनकर भारत और विलायतके यूरोपियन लोगोंका क्रोध बहुत भड़का और वे उचित अनुचितका कुछ विचार न कर बदला लेनेपर उतारूहुए किन्तु उससमय भारतके गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग् बड़े शांतचित्त और बुद्धिमान थे। उन्होंने अपने मनमें ठान लिया कि अपराधियों के साथ निरपराध नही मारे जाना चाहिये। और उन्हीं के प्रयत्नसे बखेड़ा अधिक न बढ़ने पाया॥

धीरे २ मामला सुधरनेलगा। भारतके दक्षिण भागमें उससमय शांति थी। अंतमें दिल्लीपर सरकारका फिर झंडा जा फरहराया परन्तु अभीतक लखनऊमें जो अंगेरज घिरे हुएथे उनकी दशा अच्छी न थी। सर जान लारेंसके भाई सह हेनरी लारेंस उपद्रवियोंके गोलेसे मारे जा चुके थे। उन लोगोंके पास खानेको एक दाना न था और ऐसा अवसर आगयाथा कि उन्हें लाचार होकर शत्रुकी शरण लेना पड़े। इस अवसरमें सहायताके लिये सेना आपहुँची। जनरल हेवलाकने ४०० सेनासे ५० हजार शत्रुओंका सामना कर बहुत दृढतासे लड़-कर उनके प्राण बचाये। इस कार्य में जनरल औटरमभी सहायक हुए। और दोनोंने मिलकर रेज़िडेंसीमें घिरे हुए लोगोंके प्राण बचाकर लखनऊका विजय किया। परंतु इस युद्धमें जनरल हेवलाक घायल होकर मर गये। और सर को-लिन केम्प बेल भारतके प्रधान सेनाध्यक्ष नियत हुए। इनकी सहायताके लिये विलायतसे बहुत कुछ सेना आपहुँची थी। इसलिये शनैः २ उपद्रव शांत हुआ। जिन लोगोंके बलवेमें संयुक्त होनेका थोड़ा भी प्रमाण मिला उनको फाँसीपर लटका दिया गया। सैकड़ों मनुष्योंके लटकने और लार्ड केनिंगके समाश्वासन देनेसे उपद्रव शांत हुआ। नानासाहब न मालूम किधर भाग गये। उपद्र-वियोंका साथ देकर जिस व्यक्ति ( शाह आलम ) ने दिल्लीका सम्राट् बनना चाहाथा वह कैद किया गया। भारत वर्षमें ईस्ट इंडिया कंपनीकी जगह श्रीम-तीका शासन हुआ और भारत वर्षके लाट साहब और विलायतमें स्टेटसेक्रेटरी कौंसिलकी सम्मतिसे देशका शासन करने लगे। इस बखेड़ेके समय समस्त देशी राजा सरकारके राजभक्त रहे और नेपालने सहायता की॥

भारत वर्षके बलवेका विषय इतना बड़ा है कि, उसे मैं इसपुस्तकमें विस्तार पूर्वक नहीं लिख सकताहूं। बंग भाषाके एक प्रसिद्ध लेखकने इस विषयमें पुस्तक लिखी है। उसका अनुवाद हिन्दीमें हो गया है। आशा है कि वह "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयमें छपकर शीघ्र प्रकाशित होगी॥

# अध्याय २०.

## बलवेके विषयमें राज्ञीपतिकी सम्मति ।

जिस समय बलवेका संवाद इंग्लैंड पहुंचा वहांके लोगोंमें बड़ी हलचल मची। वहांसे भारतकी रक्षाके लिये १० हज़ार सेना भारतको विदा हुई । दंपतिको इस ससाचारसे बहुत कालतक बेचैनी रही और वे दम २ के समाचार गवर्नमेंटसे लेते रहे । उनको विशेष भय इस बातका था कि, बंगालकी समस्त ( अस्सी हज़ार ) सेना उपद्रव न कर उठे परंतु यह बात न हुई और दो लाख उपद्रवियोंपर अंतमें २४०० अंगरेज़ी सेनाने विजय किया॥

श्रीमतीके पति प्रिंस एलबर्टने भारत वर्षके उपद्रव की गर्मागर्मीके समय २७ जुलाई सन् १८५७ई० को प्रूशियाके राजा ( आज कलके जर्मननरेशके दादा ) प्रथम विलियमको एक पत्र लिखा था । उससे विदित होता है कि, दंपति इस उपद्रवका क्या कारण समझते थे और वे राजनीतिमें कितने कुशल थे । उसमें लिखाथा कि:-

"आपने १७ तिथिके पत्रमें भारतवर्षकी गड़बड़के विषयमें संकेत किया है । इस लिये मैं अपने विचार प्रकट करना उचित समझताहूं । मैं यह मानताहूं कि, हमारे भारतशासन के गांभीर्य और उन कारणोंको जिनसे हम उत्तम कहला रहेहैं यूरोपियन लोग बिलकुल अपरिचित हैं ॥

"भारतवासी अपनी स्वतंत्रता रक्षित नहीं रख सकते हैं और न युद्धकरके उसे प्राप्तकर सकते हैं । कुछ कालसे नई २ जातों ने भारतवर्ष पर चढ़ाई कर जय प्राप्त किया है ऐसीरियन ईरानी और सिकंदर के शासनमें यूनानियों ने भारत पर आक्रमण कर वहां वालोंको जीता है तातारी, अरब और अन्य जातिने उनपर आक्रमण किया है । जेताओं ने वहां वालोंको अपने दबावमें डालकर उनपर अत्याचार किये हैं परंतु उन्हें जड़मेंसे उखाड़ा नहीं है । और न उन्हें अपनेमें मिलाया है । इस कारणसे वहांके लोग परस्पर मिले जुले रहने पर भी उनमें एक सामान्य प्रजाके समान एकत्रता नहीं है ॥

"जिन लोगोंका हृदय देशियोंके जंगली पनसे दुःखके मारे छिद गया है वे यदि देशियों पर चाहे जैसा अत्याचार करैं तो भी वे क्षमाके योग्य हैं । कोई भी मनुष्य उनका बचाव करनेमें समर्थ नहीं हो सकता है किन्तु जो लोग अपने घरोंमें शांतिपूर्वक निवास करते हैं और जिन्हें इस उपद्रवका कुछ भी कष्ट

उठाना नहीं पड़ा है और यदि उन्हें कुछ सहन भी करना पड़ा है तो केवल द्रव्यसंबंधी हानि, वे ही अधिक हलचल मचारहे हैं । इस कारणसे उत्तम प्रबंध करनेके कार्यमें मुख्य अपराधियोंको कठोरतम दंड देने बाद भी उन्हींकी ओरसे आक्षेप होनेका भय है ॥

"हिन्दू मुसलमानोंमें धर्मके विषयमें इतना अंतर है कि उन दोनोंका एक हो जाना असंभव है । स्वयं हिन्दू ही अपने जातिबंधनमें ऐसे जकड़े हुए हैं कि, उनमें भी एका होना कठिन है । भिन्न २ जाति एक दूसरे पर अत्याचार न करने पावै इस बातकी हम संभाल रखते हैं । न्यायालयोंमें गरीब अमीरको हम समान भावसे देखते हैं और देशके प्रत्येक भागके प्रत्येक व्यक्ति को किसी प्रकार के संदेह बिना न्याय मिलनेका हम प्रयत्न करते हैं । इसके साथही हम प्रजाके भिन्न २ धर्म और सामाजिक नियमों में हस्ताक्षेप नहीं करते हैं । इनकारणोंसे ही हमारा आधिपत्य वहां स्थिर रहसका है । वहांपर अत्याचार बिलकुल नहीं है । मालपर बाहर से आते समय कर नहीं लिया जाता है । भारतवासियों पर केवल लवण करका बोझाथा सोभी उठादिया गया । पुरानी जमीदारियोंसे जकात और व्यापारसे कंपनी अपना रुपया इकट्ठा करती है ॥

" देशके लाभ और उन्नति के लिये अबतक कुछभी नहीं कियागयाहै किन्तु पुराने शासकोंने प्रजाको जो कष्ट दियेथे उन्हें यादकर वह आजकलके राजाको आशीर्वाद देती है अबतक इस बातकी जाँच होना शेष है कि उन लोगों के मुख्य धर्मों और रीतिको देखकर यूरोपियन नीतिके अनुसार उनमें कहांतक संशोधन किया जासकता है अथवा उसका प्रवेश होसकता है ॥

"थोड़े कालसे इन बातोंसे अलग रहनेके नियमका भंग किया गया है । रेल्वे और नहरें बनानेका लग्गा लगाया गया है । पाठशालायें स्थापित हुई हैं, सती होनेकी रीति बंद कीगई है, पुनर्विवाह नियमानुसार मानागया है, जगन्नाथके रथके नीचे मनुष्योंका कुचलना बंद किया गया है । इन कामोंका अर्थ हिन्दुओंने ऐसा किया है कि इंग्लैंड उनके धर्मको दबाकर ईसाई मत फैलाना चाहता है । मिनीआ राइफल नामकी बंदूकोंमें कार्तूस बिना प्रयास घुसजायँ इस अभिप्रायसे चर्बीमें डुबोये जातेहैं । इसीसे मामला बिगड़गया है । सेनाके चित्तमें इस बातसे विचार होगया है कि उन्हें धर्म भ्रष्ट करनेका प्रयत्न कियाजाता है क्योंकि उनके मुखमें चर्बी वा मांस जानेसे वे धर्मभ्रष्ट होते हैं ॥

"भारतवर्षकी सेनामें मदरास और बंबईकी सेनासे बंगालकी सेना बढ़ी चढ़ी है । वे सैनिक उत्तम जातिके हैं। एक २ बैटालियनमें ४०० ब्राह्मण देखे जातेहैं ।

मध्य शताब्दियोंमें पोप अथवा जर्मन साम्राज्यकी ओरसे जातिच्युत करनेका विषय जिस अर्थका बोधक था वही अर्थ उनमें है । अर्थात् जो लोग जातिभ्रष्ट होजातेहैं उनका सांसारिक और राजकीय बातोंमें मृत्युतुल्य होना मानाजाता है । इसकारण बंगालसेनाके उपद्रव करने का हमें कुछ आश्चर्य नहीं है । सरकार के लिये बुरे विचार रखनेवाले मनुष्य उपद्रावियोंमें मिलगयेहैं । किन्तु किसीभी जगह की प्रजा उनमें संयुक्त नहीं हुई है । वह कहती है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट पर प्रजाका संतोषहै । ........ इस भयको दूर करनेमें हम शक्तिमान् होंगे और मुझे दृढ निश्चय है कि हम शक्तिमान् होंगेही........तबही इसका परिणाम कदाचित् अच्छा होगा ।........कंपनी अब स्थिर रहनेमें कदाचित् समर्थ न होसकेगी । इस बातमें संदेहहै । जीते रहैं गे तो देखैं गे" ॥

इसके सिवाय प्रिंस एलबर्टने रानीका ढिंढोरा तैयार करनेऔर उसका संशोधन करनेमें जो भारतका उपकार किया वह अन्यत्र प्रकाशित है । इस पत्रके पहुंचनेसे जर्मनीके सम्राट् भारत वर्षकी सच्ची स्थिति जाननेमे समर्थ हुए और इसीसे भारतवासियों तथा इंग्लैंडपर जो भांति २ के कलंकोंकी यूरोपमें गप्पें उड़तीं थीं वे बन्द होगई ॥

---

# अध्याय २१.

## भारतके नवीन प्रबंधके विषयमें श्रीमतीके विचार ।

### अंगरेज़ों का भारतपर क्रोध ।

उपद्रव शांत होगया । भारतवर्ष की प्रजाके सुखसे निवास करने का समय आया । इंग्लैंडमें उपद्रवके विषयकी चिन्ता मिटी तब भारतके भावी प्रबंधके लिये इंग्लैंडके राजनीति कुशल विद्वानोंके शिर पचानेका अवसर आया । श्रीमतीके पतिको भारत प्रबंधकी द्विविधा पसंद न थी । बलवा समाप्त होतेही मिस्टर डिसरायलीने प्रधान अमात्य लार्ड पामर्स्टनसे बलवेका कारण और प्रबंधके विचारोंकी रिपोर्ट मांगी । और उत्तर न पाकर उन्हों ने २७ जुलाईको सम्मति दी कि 'अबसे भारतका प्रबंध रानीको अपने हाथमें लेना चाहिये । आक्टूबर मासमें लार्ड पामर्स्टनने लिखाकि-" गोलार्द्धके दूसरे भागके एक विशाल प्रदेशपर दो मंत्रिदलोंसे राज्य करनेमें झंझट और कठिनता अधिकहै । इनमेंसे एकका आधार पार्लियामेंटपर है और दूसरी केवल व्यापारसेही प्रयोजन रखतीहै । वह वर्षमें केवल दो तीन बार एकत्रित होतीहै उससे वर्ष भरकी घटनाओंको देखते राज्य चलता नहीं दीखताहै । इसलिये मेरी योजना यह है कि, पार्लियामेंटके आगामि अधिवेशन में एक बिल उपस्थित कियाजाय जिससे

वर्त्तमान प्रबंधको उठाकर भारतको रानी और पार्लियामेंटके सीधे अधिकारमें लिया जाय। इस बातसे कंपनीके संबंधी विरोध करेंगे और पार्लियामेंटके मेंबर भी इसबातपर ज़ोरदेंगे इसलिये कार्य स्थिर करने पूर्व अच्छीतरह विचार होना चाहिये"। लार्डपामर्स्टनने इस चर्चापर विशेष रूपपर ध्यानदिया और श्रीमती और उनके पतिसे अनेक बार मिलकर इस विषयमें वादानुवाद किया। ३ दिसंबर सन् १८५७ ई० को पार्लियामेंट खुली और १७ को लार्ड पामर्स्टनका बिल श्रीमतीकी सेवामें उपस्थित किया गया॥

इस बीचमें भारतके गवर्नर जनरल लार्ड केनिंगका पत्र २५ सितंबरका लिखाहुआ श्रीमतीकी सेवामें पहुँचा। उसमें लिखा था किः—

"जिन लोगोंको अधिक उत्तम उदारण उत्पन्न करना चाहिये उनमें भी पागल पन और अंधा कपट देखाजाताहै ऐसी स्थिति हमारे स्वदेशियोंकी देखकर मुझे लज्जा आतीहै।एक भी मनुष्य ऐसा विचार करता नहीं दीखताहै जो मुख्य उपद्रवियों के अतिरिक्तचालीस पचास हज़ार मनुष्योंको फांसी वा गोलीसे मारडालनेका काम युक्तियुक्त वा उत्तम न समझताहो।जो लोग इस विषय में अधिकतर कहासुनी अथवा लिखापढ़ी करतेहैं उन्हें नहीं सूझताहै कि, भारतवर्षके प्रबंध तथा सेना विभागमें देशियोंको नौकर रखकर कामलिये विना और उनपर अधिकांशमें विश्वास रक्खेविना इंग्लैंडके शासकके लिये भारतपर अधिकार रखने अथवा यहां शासन करनेका काम शक्तिसे बाहरहै। प्रजाको सदाभयभीत रखना हानिकरहै—इस नियमपर जो लोग लंबे २ लेख लिखनेमें लगेहुएहैं वे गत आठ मासमें दुर्घटनाके इतिहास संबंधी पुस्तककी काली पृष्ठोंपर प्रकाश डालनेवाले हिन्दू और मुसलमानों की कृपा और उदारताके असंख्य उदाहरणोंको भूलतेहैं। यह बात उन्हें शोभा देनेवाली नहीं है"॥

इंग्लैंड और भारत वर्षके अंगरेज़ इस देशके हजारों मनुष्योंको फांसी दिलाना चाहते थे। और इस उपद्रवने उनको इतना उकसा दिया था कि देशका सर्वनाश करनेमें उनका संतोष था। इस कारण लार्ड केनिंग की सम्मति उनको रुचिकर न हुई। इसलिये वे लोग लाट साहब की निन्दा कर उनकी भारत वर्षसे बदली करादेनेकी पुकार उठाने लगे। ऐसे अवसर में श्रीमतीने इस पत्रको पाकर लार्ड केनिंगके विचारकी प्रशंसाकी और उनको इसके उत्तरमें एक पत्र लिखाः—

यहाँकी प्रजाके अधिक भागकी ओरसे समस्त भारत वर्षकी प्रजा, तथा समग्र देशी सेनापर भेदविना, जो "ईसाइयोंकी चालका अयोग्य ढंग, बतलाया जाताहै उनके लिये लार्ड केनिंगने खेद और क्रोध प्रकाशित किया उसमें मैं सहानुभूति प्रकाशित करतीहूं। परंतु प्रजाका ऐसा ढंग अधिक काल

तक नहीं रहैगा। निर्दोषस्त्रियों और बालकोंपर जैसा कुछ अत्याचार हुआहै उसके लिये किसीका भी रक्त खालेविना नहीं रहसकताहै । इस विषयकी चर्चाने यहांकी प्रजाके क्रोधको उत्पन्न कियाहै। ऐसे घृणित काम करने वालोंके लिये कैसाभी कठोर दंडदिया जाय अधिक नहीं है और चाहै जैसा खेद हमारे चित्त को उत्पन्न हो परंतु इसप्रकारके समस्त अपराधियों को कठिन दंड देनाचाहिये ॥

"परंतु सामान्य प्रजा—शांति पूर्वक निवास करने वालों—और जिन परम कृपालु देशियोंने हमारी सहायता कीहै, भागकर छिपने वालों को जिन्होंने आश्रय दियाहै और जिनका बर्त्ताव विश्वास योग्य और सच्चा रहाहै उन सबपर अत्यंतर कृपा करनी चाहिये । उन्हें जानना चाहिये कि किसी भी जाति का तिरस्कार काले रंगका चमड़ा देखकर किया नहीं जाता है बिलकुल नहीं किया जायगा किन्तु उनकी रानीकी सर्वोत्तम इच्छा उन्हें सुखी, संतुष्ट तथा उन्नति युक्त देखनेकीहै" ॥

भारत वर्षकी प्रजापर केवल इस देशके अंगरेज़ और इंग्लैंडकी प्रजाकाही कोप न था किन्तु इसका प्रभाव वहांके मंत्रिमंडलपर भी पडाथा । प्रजाकी इच्छाके प्रवाहमें पड़कर इंग्लैंडके मंत्रिमंडलने निश्चय कियाथा कि, भारत वर्षकी प्रजाको बलपूर्वक ईसाई बना लेना चाहिये और सन् १८३३ ई० में पार्लियामेंटने चार्टर नामकी जो सनद भारतवर्षको दीथी उसेभी वे लौटा लेना चाहतेथे। इस चार्टरका वही आशयथा जो श्रीमतीके ढिंढोरेका है । इस विषयके ढिंढोरेकी पांडु लिपि तैयार कर हस्ताक्षरके लिये श्रीमतीके पास भेजी गईथी । इसको श्रीमतीने बिलकुल नापसंद किया। इस विषयमें आपने पतिकी सम्मतिसे विशेष काम लिया और मंत्रिमंडलके क्रोधको दबानेके साथही उनको अपना कर्तव्य अच्छीतरह समझा दिया। इस वादानुवादके समय लार्ड पामर्स्टनका दल टूटकर लार्ड डर्बी इंग्लैंडके प्रधान अमात्य हुए थे इसलिये श्रीमतीकी ओरसे उनके प्राइवेटसेक्रेटरी लार्ड माम्सबरीने इस पांडु लिपिके संशोधनके लिये बेबल्स बर्गसे १५ अगस्त सन् १८५८ ई० को एक पत्र उन्हींके नाम लिखा जिसका आशय यह है:—

---

१ "इस [भारत वर्ष] देशका कोईभी निवासी अथवा श्रीमतीकी उस देशमें रहनेवाली असली प्रजा धर्म, जन्म भूमि, कुल, रंग अथवा इनमेंसे कोई रखनेसे किसी स्थान पद वा नौकरी पानेके लिये कंपनीके शासनमें अयोग्य न समझी जायगी" ॥

यह आईन सन् १८३३ ई० मे पार्लीयामेंटके लार्ड और कामन्स हाउसोंने पास किया ॥

" भारतवर्षमें प्रकाशित होनेवाले ढिंढोरेकी पांडु लिपिके प्रतिवाद और त्रुटियां आपको समझानेका कार्य श्रीमतीने मुझको सौंपा है । आशा है कि, आप उसे अपनी प्रौढभाषामें लिखेंगे । इस बातसे श्रीमतीको आनन्द होगा । ढिंढोरेको तैयार करते समय आपको ध्यान रखना चाहिये कि, दश करोडसे भी अधिक एशिया निवासियोंपर स्वतंत्र शासनका आरंभ करने बाद तथा भीतरी भयंकर संग्रामके अनंतर एक स्त्री राजकर्त्री उन लोगोंसे संभाषण करती है । भविष्यत्में किन नियमोंपर भारतका प्रबंध किया जायगा उसका स्पष्टीकरण कर उनके साथ आगेको कैसा वर्त्ताव किया जायगा जिसका इकरार करना है। ऐसे पत्रके लिखनेमें उदारता, परमार्थ और धर्मसबंधी विचारोंको स्वतंत्रता पूर्वक प्रकट करना चाहिये । और भारतवासियोंको अंगरेज़ी मुकुटकी सत्ता नीचे अंगरेजी प्रजाके समान गिनकर उन्हें कैसे स्वत्व दिये जायँगे और इससे उनकी कहांतक उन्नति होगी । यह बात उन्हें समझाना चाहिये " ॥

इससे श्रीमतीके विचार स्पष्ट रूपपर विदितहोगये । संशोधनसे पूर्व जो पांडुलिपि तैयार हुईथी उसमें लिखाथा कि "देशीधर्मों की जड़ काटडालने की सत्ता अंगरेज़ी सरकारको है । लार्ड मास्सबरीने लिखाकि " यह बात श्रीमतीको पसंद नहींहै श्रीमती की इच्छा है कि देशीधर्मके विषयमें यह लिखना चाहिये कि श्रीमती अपने धर्मपर बड़ा प्रेम रखती हैं और धर्मसे वह जैसा सुख और संतोष प्राप्तकरतीहैं उसके कारण वह देशीधर्मपर आघात करनेका यत्न बिलकुल न करैंगी । और यह अपने सेवकोंको सदा इसी तरहका वर्त्ताव करनेकी आज्ञा देंगी" ॥ असल मसौदेमें यह भी बात थी कि–" दीनता दूरकरने का भी सरकार प्रयत्न करैगी । " इसके विषयमें लार्डमास्सबरीने लिखाकि–" इनशब्दोंसे लेखकका भावार्थ स्पष्ट नहीं होताहै इसलिये इसवाक्यको विस्तारपूर्वक लिखनेके साथही उसमें यह भी उल्लेख होना चाहिये कि रेल्वे, तार और नहर आदिकार्य प्रजाकी उन्नति करने वालेहैं । जिससे वहांके वहमी मनुष्योंके चित्तका संदेह दूरहो " ॥

अंतमें श्रीमती की इच्छाके अनुसार लार्ड डर्बीने पांडुलिपिका संशोधन कर दिया । उसमें इतनी वृद्धि और कीगई कि–" श्रीमती अपनी अन्य प्रजाके लिये जिसतरह कर्तव्य बद्ध हैं उसी प्रकारके कर्तव्य से अपने को वह भारतवर्षके लिये बँधी समझतीहैं । हमारी प्रजाकी भलाईकी इस इच्छाके अनुसार वर्त्ताव करनेकी शक्ति सर्व शक्तिमान् परमात्मा हमें और हमारे अधीन कर्मचारियों को प्रदान करै" ॥

"अमृतबाजारपत्रिका" को विदित हुआहै कि, इंग्लैंड में भारतके प्रबंधके विषयमें जिस समय हलचल मचरही थी और वहांकी प्रजा भांति २ की तर्कें कर भारतवासियोंको अधिकतर दबानेकी सम्माति देते थे श्रीमतीको ८नवंबरको सोते समय अचानक महात्मा ज्यार्जके दर्शन हुए । उन्होंने महारानीको अनेक तरहपर समझा बुझाकर भारतवर्षके शासनके विषयमें योग्य सम्मति दी थी । श्रीमतीकी इन महात्माके साथ जो बातचीत हुई उसकी रिपोर्ट मुद्रित होकर मंत्रिमंडलके मेंबरोंको दीगई थी जिसीका फल यह ढिंढोराहै । कुछभी हो इतना अवश्यहै कि महारानीने केवल ढिंढोरेका संशोधन करते समयही दबावनहीं डालाथा बरन इंग्लैंडके मंत्रिमंडलको बलवेके समय भारतमें गोरी सेना बढ़ाने और इंग्लैंडकी सेना दुगुनी करदेनेकी सम्मति भी दी थी और साथमें ही कहदिया था कि जो यहांकी सेना न बढ़ाकर भारतकी रक्षाके लिये भेजदी जायगी तो इंग्लैंड में कोई नया उपद्रव खड़ा हो जायगा । इस आज्ञासे इंग्लैंडको बहुतलाभ हुआ॥

---

# अध्याय २२.

## श्रीमतीका ढिंढोरा ।

गत अध्यायमें जिस ढिंढोरेके लिखेजानेके विषयमें इतने वादानुवाद का वर्णन हुआहै वह भारतवासियोंके और विशेषकर हिन्दी पाठकोंके अधिक जानने योग्य है । उसी ढिंढोरेपर भारतवर्षके प्रबंधका आधारहै वही देशियोंके लिये सुशासनका पट्टा है । इस कारण उसका अविकल भाषान्तर यहांपर प्रकाशित करना परमावश्यकहै । यह ढिंढोरा १ नवंबर सन् १८५८ ई० को भारतवर्षके वाइसराय और गवर्नर जनरल लार्ड केनिंगने प्रयागमें प्रजाको सुनाया था और इसका भाषानुवाद भारतवर्ष भरके मुख्य २ नगरोंमें उसीदिन सुनाया गयाथा उसका हिन्दी अनुवाद यहहै:–

## भारतवर्षके राजा सर्दार और प्रजाके नाम श्रीमती रानी और उनकी कौंसिलका ढिंढोरा ।

ईश्वरकी कृपासे ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैण्डके संयुक्त राज्य और यूरोप, एशिया एफ्रिका, एमेरिका तथा आस्ट्रेलिया और इनके अधीन अन्य उपनिवेशोंकी रानी तथा धर्मकी रक्षका विक्टोरिया ॥

अनेक भारी कारणोंसे पार्लियामेंटकी दोनों सभाओंकी सम्मति और स्वीकार प्राप्तकर भारतवर्षके देशका जो प्रबन्ध अबतक हमारी ओरसे ट्रस्टीके तौरपर मान्यवर ईस्ट इंडिया कम्पनी चलाती थी उसे अबसे हमने अपने हाथमें लेना निश्चय किया है ॥

अब इसलिये हम इस लेखद्वारा प्रकट तथा स्वीकार करती और प्रतिज्ञा करती हैं कि, ऊपर लिखी हुई सभाओंकी सम्मति और स्वीकार करनेसे ऊपर लिखा प्रबन्ध हमने अपने हाथ में लिया है । और उक्त देशोंकी हमारी समस्त प्रजाको हम आज्ञा देती हैं कि, उन्हें सदा शुभचिन्तक ( वफादार ) रहना और हमारी, हमारे वारिसां और प्रतिनिधियोंकी ओर सच्चा भक्तिभाव रखना और अबसे पीछे हमारी ओरसे हमारे उक्त देशोंका प्रबन्ध करनेके लिये जो व्यक्ति नियतहों उनकी सत्ताका आदर करना चाहिये ॥

हम अपने विश्वासपात्र, प्यारे भाई और मंत्री चार्लस जान वाइकौंट केनिंगू की शुभचिन्तकता, चातुर्य और न्यायपर विशेष विश्वास और भरोसा रखकर इस लेखद्वारा हमारे उक्त देशोंके लिये हमारा प्रथम वाइसराय और गवर्नर जनरल नियत करती हैं । और हमारे नामपर उन देशोंका प्रबन्ध करने और हमारी ओरसे एक मंत्रीद्वारा समय २ पर जो आज्ञायें वा सूचनायें मिलें उनके आधीन रहकर हमारे नामपर सामान्यतः काम करनेकी सत्ता देती हैं ॥

और मान्यवर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवामें प्रबन्ध तथा सेना विभागके भिन्न २ पदोंपर जो लोग इस समय काम करते हैं उन्हें इस लेखद्वारा अपने २ पदों-पर स्थिर करती हैं परंतु उनके भविष्यत्का आधार हमारी कृपापर रहैगा और अबसे पीछे जो आईन बनाये जावें उनके अधीन रहकर उन्हें चलना पड़ैगा ॥

भारतवर्षके देशी राजाओंको इस लेख द्वारा हम प्रकट करती हैं कि उनके साथ जो कुछ संधियां मान्यवर ईस्ट इंडिया अथवा उसकी आज्ञासे कीगई हैं उन्हें अथवा जो प्रण उनके साथ किये गयेहों उन्हें हम स्वीकार करती हैं । और उन्हीं के अनुसार निरंतर बर्त्ताव किया जायगा और उन्हींके अनुसार वेभी संधिपत्र के पाबंद रहैं गे ऐसी हम आशा रखती हैं ॥

इस समय हमारे आधीन जितने देश हैं उनका विस्तार बढ़ाना हम नहीं चाहती हैं । और जैसे हम हमारे अधिकृत देशोंपर अथवा हमारे स्वत्वपर किसीको आक्रमण न करने देंगी वैसेही औरोंके देशपर अथवा स्वत्वपर हस्ताक्षेप करने को हम स्वीकार न करैंगी । देशी राजाओं का स्वत्व प्रतिष्ठा और सम्मानको हम अपने स्वत्व प्रतिष्ठा और सम्मानके बराबर समझैंगी । और

हम चाहती हैं कि, वे भी हमारी प्रजाशांति और सुप्रबंध से उपार्जित उन्नति और सांसारिक सुधार के फल प्राप्त करें ॥

हमारे भारतीय देशों के निवासियोंके लिये हमारी अन्य प्रजाओं के समान कर्त्तव्यसे हम अपने तईं प्रतिबद्ध समझती हैं । और सर्व शक्तिमान् ईश्वरके आशीवार्दसे उन कर्त्तव्योंको सत्यता और शुद्ध अंतःकरणसे हम पालन करेंगी ॥

ईसाई धर्म की सत्यता पर दृढ विश्वास रख और उस धर्म से मिलते हुए संतोष को मानपूर्वक स्वीकार कर हमारा धर्म हमारी किसीभी प्रजा को पालन कराने का दबाव डालनेके हमारे स्वत्व अथवा इच्छाका समान रूप पर हम निषेध करती हैं। हम रानी के पद से हमारी इच्छा और हर्ष प्रकट करती हैं कि, किसी पर भी उसके धर्मसंबंधी मत अथवा क्रियाके लिये किसी प्रकार पर पक्षपात न होगा अथवा कष्ट न दिया जायगा किन्तु सब लोगों को आईन की रक्षा अथवा अपक्षपाततासे भोगने देना होगा और हमारे आधीनस्थ कर्मचारियों को हम दृढ आज्ञा देती हैं कि, उनको हमारी किसी भी प्रजाके धर्मसंबंधी मत वा क्रिया में हस्ताक्षेप न करना चाहिये यदि कोई करैगा तो हमारी कठिन से कठिन अप्रसन्नता का पात्र होगा ॥

और हम ऐसी आज्ञा देती हैं कि जहां तक होसकै किसी भी जाति वा धर्म की हमारी प्रजाओं को उनकी शिक्षा, बुद्धिमता और प्रामाणिकताके कारण वे किसी पदका कार्य योग्य रीतिपर संपादन करने के योग्य हों उनपर उन्हें किसी प्रकारके प्रतिबंध बिना और पक्षपात रहित होकर नियत करना चाहिये ॥

भारत वर्ष के देशी अपने पूर्व पुरुषों से प्राप्त भूमि के लिये जैसा प्रेम रखते हैं उसे हम जानती हैं और उसका आदर करती हैं। और गवर्नमेंटके उचित स्वत्वके आधीन रहकर उन्हें इस विषयके समग्र स्वत्व भोगनेमें रक्षा प्राप्त हो ऐसी हमारी इच्छा है। और हम आज्ञा देती हैं कि आईन बनाने तथा प्रबंध करनेमें भारतवर्षके लोगों के वास्तविक स्वत्व और रीतिका योग्य आदर करना चाहिये" ॥

लोभी मनुष्योंने झूंठी खबरोंसे अपने देशी भाइयोंको ठगकर उनसे खुल्लं-खुल्ला उपद्रव करा जो दुर्दशा और दुष्टता को उत्पन्न किया है उसके लिये हम बहुत ही खिन्न हुई हैं। उस उपद्रवको रणभूमिमें दबाकर हमारी शक्ति प्रकाशित हुई है। जो लोग बहँकानेमें आगये थे वे शुभचिंतकताके मार्ग

पर आनेके इच्छुक हैं । उनके अपराध क्षमाकर उनपर हमारी दया दिखाने की हम इच्छा रखती हैं" ॥

रक्त प्रवाह रोकने और हमारे भारत वर्षके राज्यमें शीघ्रतासे शांति स्थापन करने की इच्छासे एक प्रान्तमें तो इस समयके पूर्वसे ही हमारे वाइसराय और गवर्नर जनरलने उचित शर्तोंसे गत उपद्रवमें संयुक्त होने वालों और हमारी गवर्नमेंटका अपराध करनेवालोंमें से अनेकोंको क्षमा प्रदान करना प्रकाशित किया है । और प्रकट किया है कि, जिनका अपराध क्षमाके योग्य न होगा उन्हें ही दंड दिया जायगा । हमारे वाइसराय और गवर्नर जनरल के इस कामको हम पसंद और स्वीकार करती हैं और इसके सिवाय नीचे लिखी आज्ञा देती हैं ॥

अंगरेज़ प्रजाके वध करने अथवा वध करनेके कार्यमें साथ देनेके जो अपराधी हैं वा होंगे उनके सिवाय सब लोगों पर हम कृपा दिखलावेंगी । बध करने वालों पर दया करना न्यायके विरुद्ध है ॥

जिन लोगोंने प्रसन्नता पूर्वक खूनियोंको आश्रय दिया है अथवा जिन्होंने उपद्रवियोंके मुखिया बनने अथवा उन्हें भड़कानेका काम किया है उन्हींके प्राणकी रक्षा नहीं की जायगी परंतु उनपर दंड करते समय इस बातपर ध्यान दिया जायगा कि वे किन संयोगोंसे राजद्रोही हुए हैं । और स्वार्थियोंकी फैलाई हुई झूंठी खबरोंसे बहँककर जिनका अपराध किया हुआ प्रमाणित होगा उनके साथ बहुत कुछ रिआयत की जायगी ॥

जिन अन्य लोगोंने सरकारके विरुद्ध शस्त्र उठाये हैं उन्हें किसी तरहकी शर्त बिना क्षमा करनेमें हम उनके लिये आना कानी करती हैं और हमारे मुकुट और प्रतिष्ठाके लिये जिन्होंने अपराध किया है उन्हें हम जाने देती हैं शर्त केवल यही है कि वे लोग अपने २ घरोंको लौटकर शांतिकें काम काजोंमें लगैं ॥

रानीके पदसे हम अपनी इच्छा प्रकाशित करती हैं कि, यह कृपा तथा क्षमा आगामि १ जनवरीतक में जो इन शर्तोंके अनुसार काम करैगा उनपर की जायगी ॥

ईश्वरके आशीर्वादसे देशमें सर्वत्र शांति स्थापित हो तब भारत वर्षमें शांतियुक्त उद्योगोंका प्रचार करने प्रजाका उपयोगी मकानादि बनवाना, तथा सुधार करने और देशका प्रबंध उसमें बसती हुई हमारी समस्त प्रजाओंके

लाभके लिये चलाना हम अंतःकरणसे चाहती हैं । उनकी उन्नतिमें हमारा बल है उनके संतोषमें हमारी स्थिरताहै और उनका आनन्दही हमारा उत्तम बदला है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हमारी यह इच्छा पूर्ण करनेमें हमें तथा हमारे अधीन अधिकारियोंको शक्तिप्रदान करै ॥

यह ढिंढोरा पढ़ेजाने बाद उसी मासकी ३ तारीखको कलकत्तेसे श्रीमतीको शुभ चिंतकता पूर्ण अभिनन्दन पत्र भेट करनेके लिये एक सभा इकट्ठी हुई। उसमें उपस्थित लोगोंमेंसे एक देशी व्यापारीने जो कुछ कहा उससे श्रीमतीके ढिंढोरेका प्रजापर उत्तम प्रभाव पड़ना विदित होताहै। उसने कहा कि–"श्रीमतीका ढिंढोरा मैंने बहुतही हर्षपूर्वक पढ़ा। उससे मुझे परम आनन्द हुआ है और उसके अंतिम वाक्यसे मेरी आँखोंमें आसूं भर आये हैं। मैंने अपने जीवन भरमें ऐसा उत्तम लेख देखनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं किया है। इसमें बहुतही न्याय और उदारताके नियम प्रकाशित हुए हैं । उसकी प्रत्येक पंक्तिमे दया और न्याय भराहुआ है। हमें उत्तम आशा और धन्यवाद पूर्वक उसका आदर करना योग्य है,। श्रीमती जब यह कहती हैं कि–तुम्हारी उन्नतिमें हमारा बल है........" तब आप लोगोंको विश्वास रखना चाहिये कि भारतवर्षके भविष्यके लिये उसके बालकोंको बहुत कुछ उत्तेजना प्राप्त करनी हैं और बहुत कुछ आशा बांधनी है। इस भाषासे कौन भाषा अधिक उत्तम, अधिक सुंदर और श्रीमतीके वचनोंको शोभा देने वाली होसकती है ? चलो हम सब मिलकर शुभचिन्तनाके साथ उनके पैरों पड़ें और बहुतही बड़े धन्यवादके साथ अतिशय बड़े भक्तिभावसे नवीन राज्यका आदर करैं " ॥

# अध्याय २३.

## विलायत और भारतके बीचमें तार।

एफ्रिकाके सिहाखण्डमें सन् १८५८ ई०को दो सरोवरोंकी खोजकीगई थी। इस वर्षके अगस्त मासकी३तारीखको कप्तान स्पीक और ग्रांटने विक्टोरिया नियांजा नामक झीलको ढूंढ निकाला। इस झीलका विस्तार सीलोन के टापू से भी अधिक बड़ा है। इसीसे नील नदी को पानी मिलता है। इसी बर्ष में प्रसिद्ध अंगरेज़ यात्री कप्तान बर्टननें 'टेनूगानिका' नामक सरोवर का पता लगाया था । इसमें से कांगो नामक नदी बहती है ॥

सन् १८५८ ई० के अगस्त की १६ तारीख को अटलांटिक महासागर में तार लगाया जाकर उस दिन से इंग्लैंड और एमेरिका में तार संवादका आवागमन आरंभ हुआ था। श्रीमती ने इसबातके हर्ष में एमेरिकाके प्रेसिडेंट को प्रथम संवाद भेजकर उन्हें बधाई दी। उसके उत्तरमें प्रेसिडेंट मिस्टर बकानन ने लिखा कि यह विजय युद्ध में विजय प्राप्त करने से भी बढ़कर है। इसबात से केवल इंग्लैंड और एमेरिका में ही हर्ष नहीं हुआ बरन् यूरोप भरके लोग हर्षित हुए थे क्योंकि दो देशों के बीच में इतने अंतर पर तार लगने का यह पहला अवसर था॥

उस समय तक भारत और विलायत के मध्य में भी तार का संबंध न था। समस्त कामकाज पत्रद्वाराही होता था। सन् १८५९ ई० की २८ मई को विलायत से अदन तक तार तैयार हुआ। प्रथम संवाद श्रीमतीने अदनके पोलिटिकल रेज़िडेंट के नाम भेजा था। इसके अनंतर करांची और मस्कत और मस्कत और अदन के बीच में तार लगाकर विलायत का भारत से सीधा संबंध होगया और जहां विलायत से भारत तक समाचार पहुँचने में कई सप्ताह लगते थे वहां घंटों में काम होने लगा॥

---

# अध्याय २४.

## स्टार आफ़ इंडिया की उपाधि और विश्व विद्यालय।

ढिंढोरा प्रकाशित होनेके अनन्तर सन् १८५९ ई० के मई मासकी १८ तारीख़ को श्रीमतीने भारत वर्ष के वाइसराय और गवर्नर जनरलके नाम एक पत्र लिखकर उपद्रव शांत होनेकी बधाई दी थी और वाइसराय तथा अन्य कर्मचारियों के सुकार्यों की प्रशंसा की थी। और देशी राजाओं से मित्रता बढ़ानेके अभीष्ट से इंग्लैंड के "गार्टर" "थिलस और सेंट पेट्रिक" के समान उपाधियाँ नियत करनेके विषयमें वाइसरायकी संमति मांगी थी। इस आज्ञापत्र का उत्तर भारतके वाइसराय लार्ड केनिंग्ने ४ जुलाई को इसप्रकार दिया थाः—

"इस देश में उपाधि के साथ भूमि अथवा रुपया प्रदान करने की चाल है। इसकारण केवल उपाधिका यहां के लोगों में कुछ मूल्य न होगा। ऐसा मुझे भय है इसलिये मेरी सम्मति यह है कि, इसप्रकार की उपाधिको श्रीमती भी धारण करें

और इंग्लैंडके अन्य लोगोंको भी दीजावें। इस कार्यसे देशियोंकी दृष्टिमें इसका आदर होगा" ॥

इसी सूचनाके अनुसार २५ जुलाई सन् १८६१ ई० को "स्टार आफ् इंडिया" की उपाधि स्थापितकर यह आज्ञा दीगई कि, जिस दिनसे श्रीमतीने भारतवर्षका शासन अपने हाथमें लिया है उसी दिन ( १ नवम्बर को ) प्रतिवर्ष यह उपाधि वितरण करना चाहिये। प्रथम बार श्रीमतीने विंडसर केसलमें एक बृहत् दर्बार एकत्रितकर अपने हाथसे पंजाबके पदच्युत राजा दलीपसिंह, लार्ड क्लाइड, सर जान लारेंस, जनरल पौलक और लार्ड हेरिस को यह उपाधि प्रदान की ॥

भारतवर्षमें शिक्षा विभाग और विश्वविद्यालय जो आजकल देखनेमें आते हैं वे सन् १८५४ ई० और ५९ के वर्षमें इंग्लैंडकी गवर्नमेंटके आज्ञापत्रोंपर आधार रखते हैं। सन् १८६६ ई० में भारतवर्षके प्रबंधके विषयमें पार्लियामेंटको परिचित करनेके लिये एक रिपोर्ट प्रकाशित हुईथी उसमें लिखाहै कि सन् १८५४ ई०में ब्रिटिश गवर्नमेंटने निश्चय किया था कि "यूरोपका साहित्य, विज्ञान, विद्या और कलाका प्रसार भारतवर्षके लोगोंके लिये उनके भिन्न २ रोजगारोंमें उपयुक्त होसकै इस प्रकारकी सामान्य शिक्षा देनेके लिये पहले की अपेक्षा उत्तम और दृढ़ उपाय करना चाहिये।" इसमें यहभी सूचना दीगई थी कि "भारतवर्षकी देशी भाषाकी उन्नति करनेके साथही उच्च कक्षाओंमें अंगरेजी भाषाकी शिक्षा दी जाय।" पार्लियामेंटकी इस आज्ञाके अनुसार प्रत्येक स्थानीय गवर्नमेंटके अधीन एक २ शिक्षा विभाग स्थापित किया गया। और साथही परीक्षाके लिये इन्स्पेक्टर नियत हुए। लंडन विश्वविद्यालय के नमूने पर कलकत्ता, मद्रास और बंबईमें विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रान्तीय गवर्नमेंटको अधिकार दिया गया। और यह भी निश्चय हुआ कि, योग्य उम्मेदवारोंको परीक्षाके बाद उपाधियां भी दीजायँ। उस समय यह भी ठहराव हुआ कि, परीक्षाओंमें धर्मसंबंधी विषयोंपर प्रश्न न किये जायँ। और इंग्लैंडकी तरह सब धर्मके लोगोंको इस कार्यमें स्वतंत्रतासे शिक्षा दी जाय। सन् १८५९ ई० में इस आज्ञा का कहांतक और किस तरह वर्त्ताव हुआ है और होता है इस बातकी जांचकी गई थी। जांचके पश्चात् आज्ञा दी गई थी कि, साधारण नियमके अनुसार गवर्नमेंटके प्रबंध तथा सेना विभागसे संबंध न रखने वाले लोगोंको शिक्षाविभागमें नियत किया जाय। विश्व विद्यालयोंके स्थापित करनेसे देशियोंके मनपर किसी तरहका भय उत्पन्न नहीं हुआहै तथापि किसी प्रकारकी अनभिज्ञता दूर करनेके

लिये पेली और बटलर जैसी धर्म संबंधी पुस्तकोंको जो विद्यार्थी प्रसन्नता पूर्वक अध्ययन करना चाहे उसके नंबर सामान्य परीक्षामें न गिनना चाहिये । ” इस नियमके अनुसार सन् १८२८ ई० में प्रथम वार एंट्रेंस परीक्षा ली गई थी । प्रयोजन यह कि श्रीमतीके भारतका शासन अपने हाथमें लेनेके वर्षसे उच्च शिक्षाका आरंभ हुआ है ॥

---

# अध्याय २९.

## भारतका भयंकर अकाल ।

सन् १८६०–६१ ई० भारत वर्षके लिये बहुत बुरा निकला । उस वर्ष इस देशमें भयानक अकाल पड़ा । इससे लाखों मनुष्य मर गये । इस दुर्भिक्षकी दारुणताके विषयमें “एन्युएल् रेजिस्टर” में लिखाहै कि भारत वर्षके पश्चिमोत्तर प्रांतमे भयानक अकाल पड़ा । पेशावरसे कानपुरतक आठसो मीलमें एक बूंद भी पानी न बरसा । धरती लोहे जैसी और आकाश पीतलके समान होगया । १ करोड़ १० लाख मनुष्योंकी बस्ती वाले २५ हज़ार वर्गमील भूभागमें दीन स्थितिके मनुष्य भूखसे मर रहे हैं । जिनमें भाग जानेकी शक्ति थी वे हजारों ही भाग गये । और जो रहे हैं वे इतने निर्बल होगये हैं कि उदार लोगोंकी ओरसे उन्हें जो दिया जाता है उसे खानेकी भी उनमें शक्ति नहीं है । मुरदे और मृतप्राय मनुष्य मार्गके इधर उधर पड़े हैं । एक २ ज़िलेमें तीन २ लाख मनुष्य कालका कवर बने हैं । मनुष्यत्व और जातिभेद जाता रहा है । अपने बालकोंको दुःख पाता हुआ देखनेसे दुःखित होकर मातापिता उन्हें मार डालने वा बेचने लगे हैं । मातायें आठ २ आनेमें अपने प्रिय बच्चोंको बेच डालती हैं । और कई जिलोंमें तो ख़रीद दारकी जातिका भी विचार नहीं किया जाता है । बंबई, कलकत्ता, मदरास और पश्चिमोत्तर प्रदेशके बड़े २ नगरोंमें अकाल फंड स्थापित हुए हैं । उनमें उदारताके साथ बहुत कुछ रुपया आया है । और उसको योग्य रीतिपर बांटनेका प्रबंध किया गया है । ” इस बातकी ख़बर मिलतेही इंग्लैंडमें लार्ड मेयरने २८ मार्च को एक सभा इकट्ठी कर फंड नियत किया था । उसमें १०७५८५ पौंड चंदा इकट्ठा हुआ ॥

इस अकालके विषयमें भारत वर्ष विभागके स्टेट सेक्रेटरी सर चार्लेस उडने पार्लियामेंटके समक्ष कहा था कि–“ भारतमें भयानक अकाल पड़ा है । वह कितना कठोर है यह बात वहां आज कलके अन्नके भावसे

विदित होगी । सन् १८३७-३८ ई० के सालमें भारत वर्षम बहुतही कठिन अकाल पड़ाथा और मनुष्य तथा चौपायोंकी बहुत संख्याका नाश हुआ था तथापि अन्नका भाव गतवर्ष जैसा महँगा नहीं हुआ था । जिन छः जिलोंमें अकाल पड़ा है वहांके भावका पड़ता फैलानेसे साधारण वर्षोंमें अन्नका अधिकसे अधिक महंगा भाव एक रूप्ये पीछे साढे चालीस सेर रहताथा किन्तु इस अकालमें एक रूपयेका अन्न नौ सेर मिलता है " ॥

---

# अध्याय २६.

## भारतवर्षका नवीन प्रबंध ।

इसी वर्षमें भारत वर्षके नवीन प्रबंधके विषयमें पार्लियामेंटने तीन नवीन आईन बनाये । प्रथम आईन भारत वर्षमें व्यवस्थापक सभायें ( Legislative Council ) स्थापित करनेके विषयमें था । इसमें निश्चय किया गया कि गवर्नर जनरल की व्यवस्थापक सभाके लिये इस विषयका एक विद्वान् विलायतसे भेजा जाय और वह तथा वाइसरायकी प्रबंधकारिणी सभा ( Executive Council ) के समस्त सभासदोंके अतिरिक्त कमसे कम आधे सभासद ऐसे होना चाहिये जो सरकारी सेवक न हों । देशी उमरावों और सरदारोंकी सहायता लेनेके लिये वाइसरायको कभी २ देशके भिन्न २ भागोंमें सभायें भरनी चाहिये । इसी तरह मदरास और बंबईके गवर्नरोंकी व्यवस्थापक सभाकी व्यवस्था की गई । इसके सिवाय वाइसरायको अधिकार दिया गया था कि वह पंजाब और बंगाल प्रान्तके लिये भी यदि उचित समझें तो सेक्रेटरी आफ़् स्टेटके स्वीकार करने पर व्यवस्थापक सभायें स्थापित कर सकें । पंजाबके लिये सन् १८६१ई० में व्यवस्थापक सभा स्वीकार होजाने पर भी गत वर्षसे वहां इस प्रकारकी व्यवस्था हुई है किन्तु पश्चिमोत्तर प्रान्तको यह स्वत्व बहुत वर्ष हुए मिलगया ॥

दूसरे आईनके अनुसार सुप्रीम कोर्ट और सदर कोर्ट संयुक्त कर दिये गये । इसमें यह ठहराया गया कि इस नवीन कोर्टमें पूरे २ अंगरेज़ बैरिस्टर, इतनेही सिविल सर्विस वाले और देशी जज रक्खे जायँ । इसके अनुसार सन् १८६२ई० में कलकत्ता, मदरास और बंबईकी हाई कोर्टें नियत हुई और इसी निगमके

आधारपर कलकत्ता हाईकोर्टमें प्रथम बार बाबू शंभुनाथ पण्डित देशी जज नियत किये गये ॥

तीसरा आईन सिविल सर्विसके विषयमें था। इसमें यह निश्चय हुआ कि सिविल सर्विस परीक्षामें पासहोनेवालोंके लिये जो पद रक्षित हैं उनके सिवाय बिना परीक्षा वालों से जो लोग योग्य हों उन्हें भी नौकरी देनेका अधिकार भारत गवर्नमेंटके हाथमें रक्खागयाहै " ॥

---

# अध्याय २७.

## एमेरिकामें युद्ध और सट्टेका व्यापार ।

एमेरिकाके दक्षिणभागमें लाखों गुलाम अपने मालिकोंके लिये गन्ने और ईखकी खेती किया करते थे। उत्तरभागमें दासव्यापार बन्दहोचुका था और समस्तप्रजाको स्वतंत्रता देनेवाले प्रान्त धन और बस्तीमें बढ़ते जाते थे और साथही दक्षिणके प्रान्तोमें जहां दासव्यापार होता था प्रजा बिलकुल दीनदशा में थी। दासोंके स्वामी इसलिये सोचने लगे कि यदि अपने दासोंके लेकर पश्चिमके प्रान्तोंमें जा बसैं और वहांपर नवीन भूमिपर खेती की जाय तो हमारी स्थिति बहुत कुछ सुधरजाय । परंतु स्वतंत्रताके पक्षपाती प्रान्तोंने इनके आनेका अवरोध किया और प्रकाशित करदिया कि अभीतक जिन प्रान्तोंमें दासव्यापार प्रचालित है उनके सिवाय अन्यत्र दासव्यापार प्रचलित न करने दिया जायगा । दक्षिणवाले इसबातको न समझे और चार वर्षतक उत्तरवालों का दक्षिणप्रान्तवालोंसे घोर संग्राम होता रहा । पहले अंगरेज़ उत्तर वालों के समर्थक थे किन्तु युद्ध आरंभ होतेही इंग्लैंडमें कपड़ोंके कारखानेवालों को एमेरिकाकी रुई मिलना बंद हुआ । और इंग्लैंडके व्यापारियोंने दक्षिण वालोंकी नानाप्रकारसे सहायता करना आरंभ किया । यहांतक कि उन्होंने दासव्यापारके पक्षपातियोंको सैनिक जहाज़ तक दिये । इंग्लैंडने युद्धके आरंभ में प्रकाशित करदिया था कि हम दोनोंमेंसे किसी की सहायता न देंगे और इसकारण वहांके व्यापारियोंका यह अनुचित कार्य इंग्लैंडकी प्रतिज्ञाके विरुद्ध था। परंतु उसने अपने नियमोंका भंग करने वालोंको रोकानहीं इस कारण उसे अंतमें तीस लाख पौंड दंडके देनेपड़े । युद्धके अंतमें यूनाइटेड स्टेट्सके उत्तर भागवालोंका जय हुआ और उन्होंने दक्षिणका दासव्यापार बन्दकराया उससमय जितने दास थे उन्हें स्वतंत्रता दी ॥

इसयुद्धमें एमेरिका की रुई इंग्लैंडमें आना बन्दहुआ । वहांके कपासपर इंग्लैंडके कारखानेवालों और जुलाहोंका आधारथा इसलिये वे लाचारहोगये । कारखाने प्रचलित रखनेके लिये उनमें आपुसकी खैंचातान चलने लगी और जिसभावपर जिसे जितनी रुई मिलै उतनीही वह खरीदने लगा । मिसर और बंबईकी कूड़ाकरकट रुई भी इंग्लैंडमें सोनेके मोल बिकने लगी । बहुतसे व्यापारी इस कार्यसे निहाल होगये और थोड़ेही दिनोंमें बंबईमें रुपयेकी चकाचक देख पड़नेलगी। परंतु इसके परिणाममें जो अंधा सट्टा प्रचलित हुआ उसने भारतके व्यापारियोंको दरिद्री कर दिया । जिस युद्धको बहुत काल तक चलनेकी दुराशाके पागलपनमें देशके मूर्खही नहीं किन्तु बुद्धिशाली अंगरेज़कर्मचारी तक भूले थे उनकी बुद्धि ठिकाने आगई। अनेक बैंक और कम्पनियां खड़ी हुई और बंबईकी प्रजाका नाशकर चलती बनी । बंबईकी गवर्नमेंटने भी उस समय एक अंशमें सट्टा करनेवाली कम्पनियोंको उत्तेजना दी थी । इस अंधे सट्टेने इतनी हानिके साथ बंबईका कुछ लाभ भी किया । चौपाटीके निकट बंबई बडौदा रेलवेकी सड़क है उस स्थानपर समुद्र था उसमें भरती डालकर धरती बनानेका काम भी इन्ही सट्टेवाली कम्पनियोंके हाथसे हुआ । इसीतरह एलफिन्स्टन सर्कलके निकटके सुंदर और भव्यमहल भी उसी समय बने ॥

---

## अध्याय २८.

### बंगालमें तूफान ।

५ अक्टूबर सन् १८६४ई०को कलकत्ता और उसके आसपासके ग्रामोंमें भयंकर तूफान आया । भयानक आँधीके साथही हुगलीनदीके दोनों किनारों पर आठ आठ मील तक तीस फुट गहरा पानी भरगया । भारत गवर्नमेंटने इस विषयमें पार्लियामेंटको जो रिपोर्ट की थी उसका सार यह है—" १०२ पक्के और ४०४९८ कच्चे मकान कलकत्तेमें बिलकुल नष्ट होगये । इनके सिवाय अनुमान पांच हजार घरोंको थोड़ी बहुत हानि हुई । अधिक मनुष्योंकी मृत्यु तो सौभाग्यवश न हुई किन्तु २ यूरोपियन और ४७ देशी मारे गये। तीन लाख मन लवण नष्ट होनेसे गवर्नमेंट और व्यापारियोंको बहुत हानि हुई । सरकारी मकानोंके उपरांत अन्य गृहोंके नष्ट होनेमें पांच लाख रुपयेकी अनुमानसे हानि हुई । कलकत्तेके उत्तर हुगली, कृष्णावर और अन्य ग्रामोंमें बहुत हानि हुई किन्तु दक्षिणके जिलोंमें तो तूफानसे कुछभी न बचसका । हबड़ेमें २ हज़ार मनुष्य १२ हज़ार

चौपाये और इतनेही मकानोंका नाश होगया। मेदिनीपुरमें २० हज़ार मनुष्य और ४० हज़ार चौपाये मारे गये। गुमगढकी बस्तीका पौन भाग नष्ट होगया और तुमलुकके १४०० घरोंमें से केवल २७ बचे। सागरके टापूकी ६ हज़ार बस्तीमें १४८८ मनुष्य जीते हैं। चौबीस परगनेके अन्य भागोंमें सात आठ हज़ार मनुष्य और चार पंचमांश चौपाये डूब गये। जो लोग इस आपत्तिमेंसे बचे उनके खानेका ठिकानाभी न रहा। कलकत्ते के बंदर में १९५ जहाज खड़े थे जिनमें ५० डूबगये। डायमंड हारबरके निकट एक जहाज डूबनेमें ३१९ मजदूर जलमग्नहुए। सेंट हेड्सके निकट एक और जहाज डूबा इसके साथ दो खलासियोंके सिवाय सबके सब डूबगये। भूखे लोगोंकें लिये पानी और अन्न पहुंचाने और मुर्दोंको गाड़नेका प्रबंध होरहा है। पानीके कुए खोदे जा रहेहैं। खारे तालाबोंका पानी निकालकर मीठा भरनेका प्रयत्न कियाजारहाहै। दुःखित लोगोंकी सहायताके लिये जो फंड स्थापित हुआहै उसमें ३ लाख रुपया आयाहै। पारसीजातिने इसमें बहुत रुपया दियाहै"॥

इस दुर्घटनाके कुछही दिन बाद १ नवंबरको मछलीपट्टनके सामुद्रिक किनारेपरभी आंधीसे बहुत दुर्दशा हुई। पानीकी रेलमें सेना और पुलिसके ७८ और साधारण प्रजाके ३०५२३ मनुष्य डूबगये। इससे जिन लोगोंको कष्ट हुआ उनकी सहायताके लिये मदरास और बंबई में फंड स्थापित हुआ॥

---

## अध्याय २९.

## एबीसीनियाका युद्ध।

सन् १८६५ ई० में एबीसीनियाके राजा थियोडोरने इंग्लैंडकी प्रजा गिने जानेवाली स्त्री पुरुषोंको कैद कर लिया। इनमें मुख्य मसोवामें रहने वाले श्रीमतीके दूत कप्तान केमेरन उनके सेक्रेटरी, एक सीरियन ईसाई मिस्टर होर्मज़द रस्म लेफ्टिनेन्ट प्रिडो और डाक्टर ब्लो थे। ये लोग ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सेवा करते हुए कैद किये गये थे। इनके सिवाय कई एक जर्मन पादरी यूरोपियन कारीगर और स्त्री बालकभी थे। अंगरेजी राजदूत कप्तान केमेरन पर एबिसीनियाके राजा थियोडोरको संदेह था। वह समझता था कि यह मिसरकी गवर्नमेंटसे मिला हुआ है। थियोडोरने श्रीमतीको एक पत्र लिखकर रूमसे लडने में सहायता मांगीथी परंतु किसी कारणसे उस पत्रका उत्तर नहीं दियागया। बात यह थी कि थियोडोर श्रीमतीका पति होनाचाहता था और वह कहता था कि, मैं

मिसरकी रानी शेबाका वंशधरहूं इस लिये यह कार्य अनुचित नहीं है । उसकी इस मूर्खतासे इंग्लैंडको उसपर कोप हुआ । पत्रका उत्तर न पाने से उसने अपनी मानहानि समझी और इस लिये इसबात का वैर लेने के लिये जो अंगरेज़ उसके हाथमें आया उसीको उसने कैद कर दिया । और उनके पैरोंमें बेडियां डालकर उन्हें मगडलाके किलेमें बन्द रक्खा । इस बातसे ब्रिटिश गवर्नमेंट पर बड़ी कठिनता आपड़ी । यदि गवर्नमेंट उसपर चढ़ाई करती तो सबके सब कैदी मारेजाते । इसलिये प्रथम राजाको समझा बुझाकर काम लेने का प्रयत्न कियागया । राजदूत तो पहलेसे कैद था ही अब राजाको समझानेके लिये जो लोग भेजगये उनको भी उसने जेल में डाल दिया । अंतमें लार्ड स्टेनलीने उसको लिख भेजा कि, यदि तीनमासके भीतर कैदी न छोड़े जायँगे तो एबिसीनियाके साथ इंग्लैंडको युद्ध करना पड़ेगा । " यह पत्र उसके पास पहुँचा नहीं । अब लड़ाईकी तैयारी कर सरकारने बंबई के प्रधान सेनाध्यक्ष सर राबर्ट नेपियर ( लार्डनेपियर आफ मैकडला ) के अधिकार में सेना भेजी । सन् १८६८ ई० के अपरेल में बंबई की सेना मैकडलाके किलेके निकट जा पहुंची । १० अपरेल की लड़ाई में ५०० एबिसीनियन मारेगये और इससे तिगुने घायल हुए । इस हानिको देखकर थियोडोर घबराया । उसने अब संधि का प्रस्तावकर कैदियोंको छोड़नेकी प्रतिज्ञा की परन्तु स्वयं शरण आनेका निषेध किया । यह बात ब्रिटिश सेनाको स्वीकार न हुई । लार्ड नेपियरने किला ले लिया । थियोडोरने शत्रुके हाथ पड़नेके बदले आत्मघात कर प्राण गँवाये । किलेको नष्टकर सर राबर्ट नेपियर लौट आये। सरकारने इस विजयके उपलक्षमें उनको बैरन नेपियर आफ मैकडलाकी उपाधि और पेन्शनदी । थियोडोरकी रानी ब्रिटिश सेना में मरगई और उसका सात वर्ष का पुत्र भारत वर्ष में शिक्षाके लिये लायागया । यहांका जल वायु उसके अनुकूल न हुआ इसलिये वह विलायत भेजागया । वहां जाकर थोड़ेकाल में मरगया । युद्धके पश्चात् सरकारने एबीसीनिया का राज्य ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलाना उचित न समझा ॥

---

## अध्याय ३०.

## ओड़ीसेका अकाल और सुलतानका स्वागत ।

सन् १८६५–६६ ई० में बंगाल प्रान्तके ओड़ीसा भाग में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा । इसकी जांचके लिये गवर्नमेंटने एक कमीशन नियत किया था । इसने

इस अकालके मुख्य दो कारण बतलाये। ( १ ) वृष्टिका अभाव और समयपर न होना और ( २ ) बंगालका अधिकतर चावल एशिया आस्ट्रेलियाको चले जानेसे अन्नका भाव महंगा होजाना—कमीशनकी गणनाके अनुसार इस दुर्भिक्ष से भूख के मारे ८१४४६९ मनुष्य मरगये और ११६०२८ का कुछ पता न चला। कुल ९२९४९७ मनुष्यों को ओड़ीसा विभागने खोदिया। धनाढ्य देशियोंने अकाल पीडितोंकी रक्षाके लियेएक फंड स्थापित किया जिसमें ६लाखरुपया इकट्ठाहुआ। इसद्रव्यमेंसे १ लाखरुपया अनाथ बालकोंकी रक्षाके लिये अलग रक्खागया॥

इसवर्ष अकालकी इतनी पीडा सहनेपर भी दूसरे वर्ष गवर्नमेंटने रूमके सुलतान अबदुल अज़ीज का इंग्लैंडमें स्वागत कर एक बाल ( नाच ) का खर्च भारतके कोशपर डाला। सन् १८६७ई०में रूमके सुलतान इंग्लैंड पधारे। इनका स्वागत करनेके लिये १२ जुलाईको श्रीमान् प्रिंस आफ़ वेल्स, मिसरके खेदीव और इंग्लैंडके प्रधान सेनाध्यक्ष बंदरपरगये। रूमी चालके अनुसार उनसे किसीने हाथ न मिलाया किन्तु टोपी उतार कर केवल सलाम कर लिया। सुलताननें अपनी टोपीके हाथ लगाकर उनका सत्कारकिया। वहांसे चलकर म्यूनिसिपेलिटीका अभिनंदन पत्र लेने बाद वह बडे ठाठके साथ श्रीमतीके महलमें पहुँचे। श्रीमतीने महलके फाटकतक उनका स्वागत किया। सुलतानने उनसे देशी चालसे सलामकी और उनके हाथका चुंबन किया। श्रीमतीने सुलतानके युवराजका मुखचूमा। १८ जुलाईको लंडनके कार्पोरेशनने उनको भोजदिया। उसमें सुलतानने अपने आगत स्वागतके लिये धन्यवाद देनेके सिवाय कहा कि यूरोप आनेमें मेरे दोप्रयोजन हैं। एक यह उन्नति का स्थान है इस लिये यहांके सुधार और उन्नतिको देखकर अपने देशकी स्थितिसे तुलना करना और दूसरे यूरोप वालोंसे मित्रता की वृद्धिं करना। दूसरे दिन भारतीय विभागके स्टेट सेक्रेटरी सह स्टाफर्ड नार्थ कोट ( आजकलके बंबईके गवर्नरके पिता ) ने भारतवर्षके खर्च से उन्हें एक बाल दिया। इस जलसें में २६०० मनुष्योंको निमंत्रण दिया गया था। सुलतान बैठे २ नाच देखते रहे और श्रीमान् प्रिंस आफ़ वेल्स और उनकी बहने बहुत नाचीं॥

इसी वर्षमें रूसगवर्नमेंटने एमेरिकाके पश्चिमोत्तरमें एलास्का उपनिवेश ७२ लाख डालरमें एमेरिकाके संयुक्त राज्योंको बेंचदिया। इससे इंग्लैंड और एमेरिकाके मध्यमें बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ। इस स्थानके निकट वर्ती समुद्रमें से सील मछली पकड़नेके विषयमें केनाडा ( ब्रिटिशराज्य ) और एमेरिकाके संयुक्त